mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-321 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
22 नवंबर 2024 शुक्रवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

विराट कोहली के ...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

नतीजों से पहले ही सीएम पद को लेकर एमवीए में रार

नाना पटोले के बयान पर संजय राउत ने जताई सख्त आपत्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा नतीजों से पहले ही महाविकास अघाड़ी में मुख्यमंत्री पद को लेकर बयानबाजी शुरू हो गई है। गठबंधन में शामिल कांग्रेस ने कहा है कि मुख्यमंत्री तो उनका ही होगा। कांग्रेस की तरफ से आए इस

बयान पर शिवसेना (उद्धव गुट) ने आपत्ति जताई है। संजय राउत प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि हम मानने वाले नहीं है। महाराष्ट्र में बुधवार 20 नवंबर को मतदान हुआ संपन्न हुआ। इस बार के चुनाव में 65 फीसदी लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है।

यूपी उपचुनाव में अबकी आरोपों के घेरे में रही 'खाकी'

यूपी उपचुनाव में पुलिस पर लगे आरोपों के बाद उठे सवाल

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव के लिए वोटिंग बुधवार को हो गई है। वोटिंग के दौरान कई जगह बवाल भी देखने को मिला है। साथ ही कई जगह पर ड्यूटी में तैनात पुलिसकर्मियों पर भी गंभीर सवाल

उठे हैं। सपा ने पुलिसकर्मियों पर मुस्लिम महिलाओं के बुर्का हटवाने से लेकर पहचान पत्र चेक करने को लेकर चुनाव आयोग से शिकायत की है। वहीं चुनाव आयोग ने शिकायतों का संज्ञान लेते हुए 7 पुलसिकर्मियो को सस्पेंड कर दिया है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए एएपी की पहली लिस्ट जारी

बीजेपी-कांग्रेस से आए 6 नेताओं को टिकट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी है। लिस्ट में 11 नाम हैं। इनमें से छह नेता ऐसे हैं, जो बीजेपी या कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए हैं। ब्रह्म सिंह तंवर, बीबी त्यागी और अनिल झा ने हाल ही में बीजेपी छोड़ी थी। वहीं जुबैर चौधरी, वीर सिंह धींगान और सुमेश शौकीन कांग्रेस से आप में आए हैं। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। इलेक्शन कमीशन मौजूदा सदन के पांच साल के कार्यकाल के खत्म होने की तारीख से पहले चुनाव की प्रक्रिया पूरी कराता है। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था।

अब भारतीय 'सेना' का साथ देंगे 'रोबोटिक' डॉग

- पहाड़ से लेकर पानी तक में रह पाएंगे ऐक्टिव, किया अभ्यास
- 40 से +55 डिग्री तापमान में भी करेंगे दुश्मन का मुकाबला
- 10 किमी दूर से कर सकेंगे ऑपरेट

जैसलमेर (एजेंसी)। दुश्मनों से लोहा लेने में भारतीय सेना का साथ अब 'रोबोटिक डॉग' भी देगा। आदेश मिलते ही दुश्मनों पर टूट पड़ेगा। फायरिंग से लेकर दुश्मनों की हरकतों पर नजर रखने में यह हमारे सैनिकों के कंधा से कंधा मिलाकर युद्ध क्षेत्र में सक्रिय रहेगा। मात्र एक घंटे के चार्ज में लगातार 10 घंटे तक काम करने की इसमें क्षमता है। पहाड़, पानी, जंगल... हर इलाके में इसकी मारक क्षमता जोरदार होगी। जैसलमेर के पोकरण फायरिंग रेंज में 'रोबोटिक डॉग' ने भारतीय सेना की बैटल एक्स डिवीजन के साथ अभ्यास किया है। 14 से 21 नवंबर तक चले इस अभ्यास के दौरान सेना के जवान भी इसकी खासियत से रूबरू हुए। भारतीय सेना में हाल ही में रोबोटिक मल्टी-यूटिलिटी लेग्ड इक्विपमेंट (आरएमयूएलआई) यानि रोबोटिक डॉग शामिल किए गए हैं।

म्यूल डॉग 1 मीटर से 10 किमी की रेंज तक ऑपरेट किया जा सकता है। वाई-फाई या लॉन्ग टर्म इवोल्यूशन यानी एलटीई पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है। छोटी दूरी के लिए, वाई-फाई का उपयोग किया जा सकता है, जबकि 4जी/एलटीई का उपयोग 10 किमी तक की दूरी के लिए किया जा सकता है। इसमें कैमरा लगा होता है जो 360 डिग्री तक घूम सकेगा। रोबोटिक डॉग्स सेंसर्स के माध्यम से काम करते हैं। इनमें एक रिमोट कंट्रोल यूनिट होती है, जिससे इनको मॉनिटर किया जाता है। ये रोबोटिक डॉग्स जरूरी सामान भी पहुंचाएंगे।

थर्मल कैमरों और रडार से हैं लैस

रोबोटिक डॉग्स थर्मल कैमरों और रडार से लैस हैं। इसकी सबसे बड़ी खासियत इसकी डिजाइन है। यह बर्फ, रेगिस्तान, ऊबड़-खाबड़ जमीन, ऊंची सीढ़ियों यहां तक कि पहाड़ी इलाकों में हर बाधा को पार करने में सक्षम बनाता है। रोबोटिक डॉग जवानों को किसी भी नुकसान से बचाते हुए दुश्मन के ठिकानों पर गोलीबारी करने में भी सक्षम है।

गंगा में 'आचमन' के लिए भी नहीं बचेगा जल!

प्रदूषण पर एनजीटी की ताजा रिपोर्ट ने बढ़ाई चिंता

देहरादून (एजेंसी)। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (पीसीबी) की ओर से अक्तूबर में जारी रिपोर्ट में बताया गया कि अक्तूबर में एसटीपी से गंगा में गया पानी सितंबर की तुलना में ज्यादा खराब रहा। जल निगम व जल संस्थान के सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट(एसटीपी)से निकलने वाले पानी ने अक्तूबर में भी गंगा को प्रदूषित किया। रिपोर्ट

के अनुसार, ओल्ड सस्पेंशन चमोली के एसटीपी (.05 एमएलडी) से सितंबर में निकले पानी में फीकल कोलीफॉर्म की मात्रा 280 मोस्ट प्रोबेबल नंबर (एमपीएन) थी, जो अक्तूबर में 1600 एमपीएन पर पहुंच गई है। गंगोत्री में फीकल कोलीफॉर्म की मात्रा 540 से 920 एमपीएन पर पहुंच गई। बदरीनाथ में यह मात्रा 920 एमपीएन तक है। पीसीबी की रिपोर्ट से जल संस्थान में खलबली मची है।

अडाणी के बहाने राहुल का पीएम मोदी पर बड़ा हमला

- राहुल गांधी बोले- अडाणी को बचा रहे हैं प्रधानमंत्री मोदी
- कहा-2000 करोड़ का घोटाला करके भी बाहर हैं अडाणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल के आरोपों पर जवाब देते हुए गुरुवार को भाजपा ने कहा अडाणी ग्रुप के खिलाफ अमेरिकी केस में नामित चारों राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं थी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और तमिलनाडु में उसकी सहयोगी पार्टी की सरकार थी। पार्टी प्रवक्ता संबित पात्रा ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री मोदी की छवि खराब कर रहे हैं।

उन्होंने 2019 में राफेल मुद्दा उठाया था, लेकिन बाद में उन्हें सुप्रीम कोर्ट में माफी मांगनी पड़ी। अमेरिकी केस में ओडिशा, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ और जम्मू-कश्मीर राज्य में बिजली कंपनियों के साथ कॉन्ट्रैक्ट करने के लिए सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने का आरोप है। राहुल गांधी ने अमेरिका में गौतम अडाणी पर लगे करप्शन के आरोपों पर गुरुवार को

प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। उन्होंने कहा था कि अडाणी जी 2 हजार करोड़ रुपए का स्कैम कर रहे हैं और बाहर घूम रहे हैं, क्योंकि पीएम मोदी उन्हें प्रोटेक्ट कर रहे हैं। गौतम अडाणी ने अमेरिका में क्राइम किया है, लेकिन भारत में उन पर कुछ नहीं हो रहा है।

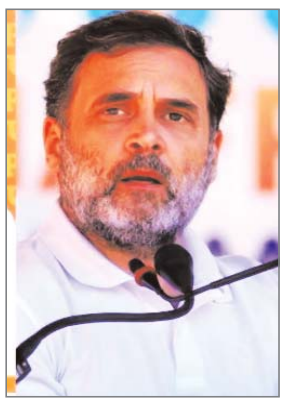

डोमिनिका और गुयाना ने पीएम मोदी को दिया सर्वोच्च सम्मान

- भारत गुयाना में जन औषधि केन्द्र खोलेगा, डिजिलॉकर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लॉन्च होगा

जॉर्जटाउन (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गुयाना में कैरिबियाई देश डोमिनिका ने %द डोमिनिका अवॉर्ड ऑफ ऑनर% से सम्मानित किया है। डोमिनिका की राष्ट्रपति सिल्वेनी बर्टन ने क्क्र मोदी को अपने देश के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा। कोविड-19 महामारी के दौरान डोमिनिका को वैक्सीन पहुंचाने के लिए क्क्र मोदी को यह अवॉर्ड दिया गया है। गुयाना ने भी मोदी को अपने सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान %ऑर्डर ऑफ एक्सिलेंस% और बारबाडोस ने ऑनररी ऑर्डर ऑफ फ्रीडम ऑफ बारबाडोस से सम्मानित किया। उन्होंने अवॉर्ड सभी भारतवासियों को समर्पित किया। इसके अलावा दो दिवसीय गुयाना यात्रा में क्क्र मोदी ने कैरिबियाई देशों के प्रतिनिधियों के साथ दूसरे इंडिया-कैरिकॉम समिट में भी हिस्सा लिया। समिट के इतर प्रधानमंत्री ने कैरिबियाई देशों के प्रतिनिधियों से द्विपक्षीय चर्चाएं कीं। गुयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान के अलावा

क्क्र मोदी ने डोमिनिका के प्रधानमंत्री रूजवेल्ट स्केरिट और सूरीनाम के राष्ट्रपति चान संतोखी सहित अन्य नेताओं से औपचारिक बातचीत की। बातचीत के बाद क्क्र मोदी और राष्ट्रपति इरफान ने लोगों को संबोधित भी किया। गुयाना के राष्ट्रपति ने कहा- क्क्र मोदी का का यहां होना हमारे लिए सबसे बड़ा सम्मान है। वे नेताओं के बीच चैंपियन हैं। मोदी ने शानदार लीडरशिप की है। विकासशील दुनिया को रोशनी दिखाई है। विकास का वो तरीका अपनाया है, जिसे कई लोग अपने देश में अपना रहे हैं। मोदी ने गुयाना में स्वागत के लिए राष्ट्रपति इरफान का

धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति इरफान का भारत के साथ विशेष रिश्ता है। वे भारतीय समुदाय के ब्रांड एंबैस्डर हैं। क्क्र ने कहा कि वो लगभग 24 साल के बाद गुयाना की यात्रा पर आए हैं। इससे पहले वो एक आम आदमी के तौर पर निजी यात्रा के लिए गुयाना आए थे। किसी भारतीय क्क्र का यह 56 साल बाद गुयाना दौरा है। भारत ने गुयाना के लोगों के कौशल विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मणिपुर में बिगड़े हालात को संभालने पहुंची सेंट्रल फोर्स

- आठ और कंपनियां पहुंचीं, एक कंपनी महिला बटालियन की
- मणिपुर कांग्रेस की खड़गे को चिट्ठी-चिदंबरम पर ऐक्शन लें

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में हिंसा बढ़ने के बीच केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (ष्टक्क्र) की 8 और कंपनियां बुधवार को राजधानी इंफाल पहुंच गई। एक दिन पहले ही ष्टक्क्र की 11 कंपनियां मणिपुर पहुंची थीं। अधिकारियों के मुताबिक ष्टक्क्र और क्क्स्र की चार-चार कंपनियों को राज्य के संवेदनशील और सीमांत इलाकों में तैनात किया जाएगा। ष्टक्क्र की इन कंपनियों में से एक महिला बटालियन की है। केंद्र सरकार ने हाल ही में घोषणा की थी कि मणिपुर में ष्टक्क्र की 50 नई कंपनियां तैनात की जाएंगी।

राज्य कांग्रेस की अपील- चिदंबरम पर कार्रवाई करें खड़गे मणिपुर कांग्रेस ने बुधवार को पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से विवादास्पद पोस्ट करने वाले पी चिदंबरम के खिलाफ कार्रवाई करने की अपील की है। चिदंबरम ने क्षेत्रीय स्वायत्तता की वकालत की थी। खड़गे को लिखे लैटर में नेताओं ने कहा, ÷पी चिदंबरम के पोस्ट की हम निंदा करते हैं। राज्य में बढ़ते तनाव, सार्वजनिक शोक और राजनीतिक संवेदनशीलता के मौजूदा माहौल को देखते हुए उनकी भाषा और भावनाएं अनुचित थीं।

तीन घंटे से ज्यादा लेट है फ्लाइट तो रद्द कर दो

- यात्री सुरक्षा पर ध्यान दो, सभी एयरलाइंस को सरकार का सख्त निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने बुधवार को एयरलाइंस को कई अहम निर्देश दिए। उन्होंने कोहरे के कारण संभावित देरी या रद्द उड़ानों के बारे में यात्रियों को समय पर जानकारी देने और तीन घंटे से अधिक देरी होने पर उड़ानें रद्द करने के

निर्देश दिए। उन्होंने %यात्री-केंद्रित दृष्टिकोण और यात्री सुरक्षा% को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर जोर दिया। एनडीटीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली हवाई अड्डे पर चार में से तीन रनवे पर ष्ट्र ढ्ढढ्ढ ढ्रू सिस्टम सक्रिय कर दिए गए हैं, जो अत्यधिक खराब दृश्यता (विजिबिलिटी) की स्थिति में भी सुरक्षित लैंडिंग सुनिश्चित करता है।

पाक के खैबर पख्तूनख्वा में भीषण हमला

- आतंकियों ने 39 लोगों को गोलियों से भूना, मचा कोहराम

कुर्रम (एजेंसी)। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा जिले के कुर्रम में भीषण आतंकवादी हमला हुआ है। आतंकवादियों ने कुर्रम के ओचट इलाके में कई यात्री वाहनों पर गोलीबारी की, जिसमें अब तक 39 लोगों के मारे जाने की खबर है।

मृतकों की संख्या की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन खोरसान डायरी की रिपोर्ट में बताया गया है कि इन हमलों में 14 यात्री गंभीर रूप से घायल हैं। इससे मरने वालों की तादाद और ज्यादा बढ़ सकती है। मरने वालों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। मौके पर पहुंची पुलिस और सेना ने रास्ते को खाली करा लिया है

और राहत-बचाव कार्य जारी है।

कुर्रम पुलिस ने कहा कि पाराचिनार से पेशावर जा रहे काफिले को निशाना बनाकर हमला किया गया। इस हमले में लोगों की मौतें हुई हैं। कुर्रम जिले में कई महीनों से विभिन्न जनजातियों और दलों के बीच संघर्ष चल रहा है। इन संघर्षों में दर्जनों लोगों की जान जा चुकी है।

एक घंटे में पहुंचेंगे कटरा से माता वैष्णों देवी के भवन

- 300 करोड़ खर्च करेगा श्राइन बोर्ड, सांझीछत तक लगेंगे 6 मिनट

कटरा (एजेंसी)। माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए जाने वाले भक्तों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है। भक्तों की तीर्थयात्रा को सुलभ और सहज बनाने के लिए माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने 300 करोड़ रुपये की लागत से रोपवे का निर्माण करने का फैसला किया है। इसके तहत कटरा से भवन तक जाने तक का रास्ता भक्तों के लिए बेहद आसान हो जाएगा। वैष्णो देवी मंदिर श्राइन बोर्ड द्वारा जानकारी दी गई है कि ये प्रोजेक्ट साल 2026 के दिसंबर तक कंप्लीट हो जाएगा, जिससे भवन तक का रास्ता छोटा हो जाएगा। श्राइन बोर्ड के अधिकारियों का कहना है कि अभी माता के भवन तक जाने में 6-7 घंटे का समय लगता है, लेकिन जब यह प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा, तो रोपवे के जरिए यह रास्ता 1 घंटे का ही रह जाएगा। इसको लेकर श्री माता वैष्णोदेवी श्राइन बोर्ड के मुख्य

कार्यकारी अधिकारी अंशुल गर्ग ने कहा कि रोपवे के जरिए कटरा से सांझीछत जाने में महज 6 मिनट का वक्त लगेगा। इसके बाद अगर लोग 30-45 मिनट पैदल चलेंगे, तो वे माता के भवन तक जा सकेंगे। रोपवे प्रोजेक्ट के संबंध में जानकारी देते हुए अंशुल गर्ग ने बताया कि रोपवे की एक क्षमता इतनी ज्यादा होगी कि यह महज एक घंटे में 1000 लोगों को एक से दूसरी जगह ले जा सकेगा। सूत्रों ने बताया कि इस साल 86 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री पवित्र तीर्थस्थल पर मत्था टेक चुके हैं और यह आंकड़ा 1 करोड़ से ज्यादा होने की संभावना है। पिछले साल 95 लाख से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने तीर्थस्थल पर मत्था टेका था।

संक्षिप्त समाचार

फिल्म द साबरमती रिपोर्ट टैक्स फ्री-आदेश जारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य शासन ने श्री धीरज सरना द्वारा निर्देशित हिन्दी फीचर फिल्म द साबरमती रिपोर्ट को मध्यप्रदेश में ट्रैक्स फ्री कर दिया है। इस संबंध में आदेश जारी कर दिये गये हैं। मध्यप्रदेश में फिल्म को प्रदर्शन की अवधि 21 नवम्बर से 20 दिसम्बर 2024 तक के लिये राज्य माल और सेवा कर (एसजीसएसटी) के समतुल्य राशि की प्रतिपूर्ति करते हुए दर्शकों को इस राशि की छूट प्रदान की है। फिल्म के प्रदर्शन के लिए संबंधित सिनेमाघरों/मल्टीफ्लेक्स में फिल्म के लिए राज्य माल और सेवा कर (एसजीएसटी) की धन राशि को घटाकर दर्शकों को टिकट विक्रय किया जाएगा। फिल्म प्रदर्शन के लिए संबंधित सिनेमाघरों / मल्टीफ्लेक्स के प्रचलित सामान्य प्रवेश शुल्क में वृद्धि नहीं की जा सकेगी। सेवा प्रदाय पर देय एवं भुगतान किए गए राज्य माल और सेवा कर (एसजीएसटी) के अंश के बराबर की राशि की राज्य शासन द्वारा प्रतिपूर्ति की जाएगी।

मातृछाया व वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर और महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने आयकर भवन के पीछे स्थित मातृछाया का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मातृछाया के संचालक से बच्चों को उपलब्ध कराई जाने वाली विभिन्न सुविधाओं को विस्तृत से जाना और इसे व्यवस्थित रूप से चलाने के लिये आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती ठाकुर ने जे.पी. अस्पताल परिसर स्थित सखी वन स्टॉप सेंटर की व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया। केंद्रीय राज्यमंत्री व विभागीय मंत्री ने सेंटर के कर्मचारियों से यहां आने वाली पीड़िताओं को दी जाने वाली कानूनी सलाह व उनको दिये जाने वाले उपचार संबंधी जानकारी प्राप्त की। सेंटर के संचालन से जुड़ी आवश्यक जानकारियां लीं और सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान केंद्रीय महिला एवं बाल विकास विभाग की संयुक्त सचिव सुश्री प्रीति पंत, केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री की निज सचिव सुश्री निमिषा झा, मप्र महिला एवं बाल विकास आयुक्त श्रीमती सूफिया फारूकी वली, संयुक्त संचालक, जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं दोनों संस्थान के कर्मचारी उपस्थित थे।

आयुष मंत्री परमार की अध्यक्षता में हुई पुरस्कार चयन समिति की बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में बुधवार को मंत्रालय में आयुष विभाग अंतर्गत पुरस्कार चयन समिति की बैठक हुई। बैठक में पंडित उद्धवदास मेहता वैद्यशास्त्री आयुर्वेद सेवा सम्मान पुरस्कार वर्ष-2022 के लिए पुरस्कार चयन समिति ने व्यापक विचार मंथन किया। बैठक में सर्वसम्मति से वर्ष-2022 के पुरस्कार के लिए नाम का चयन किया गया। आयुष मंत्री श्री परमार ने पंडित उद्धवदास मेहता वैद्यशास्त्री आयुर्वेद सेवा सम्मान पुरस्कार वर्ष-2023 के लिए अनुशंसा समिति की बैठक शीघ्र सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। ज्ञातव्य है कि उक्त पुरस्कार वर्ष-2023 के लिए भी विज्ञापन जारी किया जा चुका है। बैठक में प्रमुख सचिव आयुष श्री डी.पी. आहूजा एवं आयुक्त आयुष श्रीमति आर. उमा माहेश्वरी सहित समिति के सदस्य डॉ. एस.एन. पांडे (उज्जैन) एवं वैद्य श्री प्रभाकर चतुर्वेदी सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

अनियमितता, गंभीर लापरवाही के चलते बिजली कंपनी के 4 इंजीनियर निलंबित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कार्य में अनियमितता और कार्य में गंभीर लापरवाही पाए जाने पर कठोर कार्रवाई की है। इस कार्रवाई में 4 इंजीनियरों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। कार्रवाई प्रबंध निदेशक सुश्री रजनी सिंह के निर्देश पर की गई है। निलंबित इंजीनियरों में इंदौर संचारण संधारण संभाग के कार्यपालन यंत्री श्री अभिषेक रंजन, भौंरासला बिजली वितरण केंद्र प्रभारी सहायक यंत्री श्री राहुल खत्री, भौंरासला वितरण केंद्र के कनिष्ठ यंत्री श्री शैलेंद्र पाटकर और चिकलौंडा (बेटमा) बिजली वितरण केंद्र प्रभारी कनिष्ठ यंत्री श्री प्रेम सिंह कनेश शामिल है। श्री रंजन को निलंबन अवधि में सतर्कता कार्यालय इंदौर, श्री खत्री को बुरहानपुर सर्कल कार्यालय, श्री पाटकर को सर्कल कार्यालय खरगोन, श्री कनेश को बदनावर संभागीय कार्यालय में अटैच किया गया है। इसी के साथ श्री ज्ञानेंद्र कुमार गौड़ को एसटीसी इंदौर ग्रामीण से हटाकर कार्पोरेट कार्यालय भेजा गया है। श्री गौड़ को कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया है। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कार्मिकों से नियमों, प्रक्रिया के अनुरूप कार्य करने एवं समय पालन के साथ ही अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के निर्देश दिये हैं।

भारत केंद्रित शिक्षा से समृद्ध पाठ्यक्रम निर्माण के लिए, भारतीय दृष्टि की आवश्यकता -मंत्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत का ज्ञान, हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन में भारत केंद्रित शिक्षा से समृद्ध आदर्श पाठ्यक्रम निर्माण के लिए, लेखकों में गहन भारतीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारतीय दृष्टि के साथ, भारतीय ज्ञान परम्परा समृद्ध पाठ्यक्रम निर्माण करने की आवश्यकता है, इससे शिक्षा के मंदिरों से विद्यार्थियों में स्वत्व एवं राष्ट्र निर्माण का भाव जागृत एवं स्थापित होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मूल ध्येय, श्रेष्ठ नागरिक निर्माण करना है, इसके लिए हम सभी को स्वत्व के साथ अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने बुधवार को भोपाल स्थित आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी के स्वर्ण जयंती सभागृह में उच्च शिक्षा विभाग अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य

में आयोजित केंद्रीय अध्ययन मंडल की बैठक एवं कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर कही।

मंत्री श्री परमार ने भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। श्री परमार ने कहा कि पाठ्यक्रम की पहली इकाई में ही भारतीय ज्ञान परंपरा का तथ्यपूर्ण समावेश करना है। विद्यार्थियों को यह ज्ञात होना चाहिए कि विश्व मंच पर इतिहास में भारत की क्या साख रही है।

भारत का ज्ञान विश्व मंच पर सबसे पुरातन ज्ञान है, ईसा से भी हजारों वर्षों पूर्व, भारतीय समाज में सर्वत्र विद्यमान ज्ञान परम्परा का, पाठ्यक्रमों में भारतीय दृष्टि से परिपूर्ण समावेश करना है। विश्वमंच पर राष्ट्र के गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए, हमें हीनभावना से बाहर आकर भारतीय दृष्टि से पाठ्य पुस्तकों में, भारतीय ज्ञान को समाहित करना है। श्री परमार ने कहा कि भारतीय परंपराओ पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर, युगानुकुल परिप्रेक्ष्य में शोध एवं अनुसंधान की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि विश्व भर में भारत आध्यात्म का केंद्र रहा है। मानवता एवं लोककल्याण, पुरातन से ही भारतीय दृष्टिकोण रहा है। पाठ्यक्रमों में भारतीय दर्शन वसुधैव कुटुंबकम् को समावेश करने की आवश्यकता है। हर क्षेत्र में भारतीय ज्ञान का अनंत भंडार है। इतिहास, अर्थशास्त्र, फिजिक्स, केमिस्ट्री एवं गणित सहित सभी विषयों में भारतीय पुरातन ज्ञान के तथ्यपूर्ण संदर्भों पर शोध एवं अनुसंधान करते हुए, सही परिप्रेक्ष्य में तथ्यपूर्ण संदर्भों को जनमानस के समक्ष लाने की आवश्यकता है। इसके लिए हमारी ज्ञान संपदा को तथ्यों एवं उदाहरण के साथ, सही परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रमों से समावेश करना होगा। श्री परमार ने कहा कि स्वतंत्रता के पूर्व एवं बाद भी, भारतीय गौरव के सन्दर्भों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की आवश्यकता है। इससे विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान पर गर्व होगा।

विभागीय योजनाओं व गतिविधियों का प्रचार प्रसार जिले स्तर पर भी किया जाना आवश्यक-केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती ठाकुर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर की अध्यक्षता और प्रदेश की महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया की उपस्थिति में बुधवार को मंत्रालय में विभागीय समीक्षा बैठक हुई।

केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती ठाकुर ने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता के लिए पीएचई विभाग से समन्वय कर आंगनवाड़ियों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराये जाने के हरसंभव प्रयास कराये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार जिला स्तर पर व्यापक रूप से होना चाहिए। सरकारी कार्यालयों, बस स्टैंड्स, स्कूलों, सार्वजनिक स्थानों पर विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार निरंतर किया जाना चाहिए। लाड़ली बहना योजना, सुकन्या समृद्धि योजना आदि महत्वपूर्ण योजनाओं का प्रधानमंत्री की मंशानुरूप प्रचार प्रसार कराया जाना चाहिए।

महिला बाल विकास मंत्री सुश्री भूरिया ने झाबुआ में शुरू किये गए मोटी आई कुपोषण मुक्त झाबुआ अभियान की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे नवाचार से हम कुपोषण मुक्त मध्यप्रदेश बनाने में सफल होंगे।

बिजली चोरी के मामले में 22 हजार 810 रूपये जुर्माना, अदायगी नहीं करने पर 4 माह की सजा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुलताई जिला बैतूल की विशेष न्यायालय ने विद्युत चोरी के मामले में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के बैतूल वृत्त के मुलताई वितरण केंद्र अंतर्गत आरोपी श्री अर्जुन बुवाडे को 22 हजार 810 रूपये जुर्माना तथा अदायगी नहीं करने पर 4 माह की सजा सुनाई है। मुलताई न्यायालय के विशेष न्यायाधीश (विद्युत) श्री पंकज चतुर्वेदीने 19 नवंबर 2024 को निर्णय पारित कर आरोपी श्री अर्जुन बुवाडे को दोषी मानते हुए जुर्माना अधिरोपित किया है।

गौरतलब है कि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी केसहायक प्रबंधक श्री बी.के. मरावी ने ग्राम सावरी, तहसील मुलताई का आकस्मिक निरीक्षण किया तो उस दौरान आरोपी श्री अर्जुन बुवाडे द्वारा सौ मीटर सर्विस लाइन से इनकमिंग टेपिंग कर घरेलू बिजली चोरी करते हुए पाया गया। मौके पर आरोपी द्वारा 1625 वॉट विद्युत का अवैध उपयोग करते पाया गया। प्रकरण में कार्यवाही करते हुए विद्युत अधिनियम की धारा 135 के तहत विद्युत चोरी का अपराध कारित कर पंचनामा बनाया और आरोपी को 22 हजार 07 रुपये प्रोविजनल बिल दिया गया। जब आरोपी श्री अर्जुन बुवाडे ने निर्धारित समयावधि में राशि जमा नहीं की तो बिजली कंपनी के उपमहाप्रबंधक द्वारा विशेष न?यायालय में परिवाद प्रस?तुत किया। साक्ष?य तथा आरोपी द्वारा अपना जुर्म कबूलने के बाद मुलताई जिला बैतूल की विशेष न?यायालय ने 22 हजार 810 रूपये जुर्माना तथा जुर्माना अदायगी न करने पर आरोपी को 4 माह की सजा सुनाई है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने इस निर्णय के परिप्रेक्ष्य में सभी आम लोगों से आग्रह किया गया है कि वे वैध कनेक्शन लेकर ही बिजली का उपयोग करें। अनधिकृत या अवैध रूप से बिजली चोरी दण्डनीय अपराध है।

खेल भावना जीवन में रखती है अहमियत- मंत्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि खेल हमें जीवन में हार और जीत को समान भाव से स्वीकारने और खेल भावना से जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। किसी गांव, कस्बे, शहर की पहचान वहां के खेल, खिलाड़ी और मैदान से होती है। किसी खेल में कौन जीता, कौन हारा यह महत्वपूर्ण नहीं होता है, बल्कि खिलाड़ी खेल के मैदान में उतरा है, यह महत्वपूर्ण होता है। यह बात मंत्री श्री सारंग ने नरसिंहपुर के गाडरवारा के रूद्र मैदान में आयोजित राष्ट्रीय शालेय कबड्डी प्रतियोगिता के समापन अवसर पर कही। कार्यक्रम में परिवहन व स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, पूर्व राज्यसभा सांसद श्री कैलाश सोनी उपस्थित थे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि कौन कितना बड़ा खिलाड़ी

बनेगा, यह दावा तो मैं नहीं कर सकता, किंतु जो खिलाड़ी प्रतियोगिता में शामिल हुआ है, वह उतना ही अच्छा नागरिक बनेगा, यह दावा कर सकता हूं। खेल हमें नियमों से चलना एवं मर्यादा का पालन करना सीखाते हैं। जीवन में भी खेल भावना अहमियत रखती है। नियम कानून की मर्यादा में रहते हुए कैसे धैर्य के साथ अपने विरोधी को परास्त किया जाता है, यही एक खिलाड़ी की पहचान होती है।

गाडरवारा में आयोजित इस प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने उच्चतम स्तर की खेल भावना का प्रदर्शन किया है। यह अनुशासित जीवन शैली को बढ़ावा देता है।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के खेलों को नई पहचान मिली है। खेलो इंडिया के माध्यम से देशभर में खेल की उत्कृष्टता को बढ़ावा देने का प्रयास हुआ है। खेलों के उन्नयन के लिए प्रदेश सरकार ने भी अहम कदम उठाये हैं। खेलों के विस्तार के साथ-साथ खिलाड़ियों को विश्व स्तरीय तकनीक एवं सुविधायें दी जा रही है। मध्यप्रदेश में होने वाली खेल प्रतियोगिताओं से कई उत्कृष्ट खिलाड़ी मिलेंगे, जो आने वाले समय में भारत का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर सकेंगे। मंत्री श्री सारंग ने गाडरवारा शहर में स्टेडियम निर्माण किये जाने की घोषणा की। साथ ही गाडरवारा विधानसभा क्षेत्र में 10 फिट इंडिया क्लब खोले जाने की भी स्वीकृति दी।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि मंगलवार रात्रि जब मैं भोजन शाला में जाकर खिलाड़ियों से मिला, तो खिलाड़ियों ने बताया कि उनकी इच्छा गाडरवारा घूमने की थी। ऑटो चालक ने उन्हें घुमाया और इसके बदले उसने पैसे नहीं लिये। मैं यह सुनकर काफी प्रसन्न हुआ।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम की प्रदेश स्तरीय स्टेयरिंग कमेटी की हुई बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनकेप) अंतर्गत प्रदेश स्तरीय स्टेयरिंग कमेटी की बैठक में शहरों की वायु गुणवत्ता सुधार के लिये माइक्रो लेबल एक्शन प्लान बनाने के निर्देश दिये हैं। मुख्य सचिव श्री जैन ने एनकेप अंतर्गत चिन्हित प्रदेश के नॉन अटेनमेंट शहर भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन, देवास एवं सागर के कलेक्टर कमिश्नर को आगामी बैठक में स्वच्छ वायु के लिये एक्शन प्लान प्रस्तुत करने को कहा है। बैठक में एनकेप अंतर्गत चिन्हित शहरों के कलेक्टर एवं कमिश्नर वीडियो कान्फ्रेंसिंग से शामिल हुए। आयुक्त नगरीय निकाय एवं आवास ने एनकेप में चिन्हित प्रदेश के नॉन अटेनमेंट शहरों की वायु गुणवत्ता में सुधार के लिये किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रदेश के शहरों की वायु गुणवत्ता सूचकांक (ए.क्यू.आई.) की जानकारी प्रतिदिन प्रस्तुत की जा रही है जिसके अनुसार प्रदेश के 07 नॉन-अटेनमेंट शहरों के अतिरिक्त सिंगरौली, मण्डीदीप एवं पन्ना का वायु गुणवत्ता सूचकांक भी खराब से बहुत खराब श्रेणी का आ रहा है। इनके सुधार के लिये गंभीरतापूर्वक माइक्रो लेबल की प्लानिंग करें। उन्होंने उज्जैन, ग्वालियर, देवास एवं सागर द्वारा वायु गुणवत्ता सुधार के लिये वर्ष 2023-24 की स्वीकृत राशि का शत-प्रतिशत उपयोग नहीं करने पर अप्रसन्नता जताई। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि शहरों के आसपास के क्षेत्रों में पराली जलाने की घटनाओं पर तत्काल रोक के लिये माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा पारित आदेश के पालनार्थ प्रावधानित दण्ड की कार्यवाही विशेष अभियान चलाकर की जाये। इसके साथ-साथ उनको व्यवहारिक समझाईश (कॉउंसलिंग) देने के लिये समय-समय पर कार्यक्रम भी आयोजित करें।

जैविक खेती को प्रोत्साहित करने की जरूरत है- मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल स्वच्छ, स्वर्णिम, समृद्ध भारत निर्माण के लिए किसान आध्यात्मिक सम्मेलन भारतीय कृषि दर्शन एवं सम्पूर्ण ग्राम विकास कार्यक्रम में शामिल हुए। यह कार्यक्रम प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नरसिंहपुर के तत्वावधान में पीजी कॉलेज नरसिंहपुर के ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि यह मेरे लिए अच्छा दिन है कि अनुभवी व्यक्तियों के बीच अनेक अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि जब वे 10 साल के थे, उस समय सोयाबीन की फसल उपजाने की शुरूआत गोटेगांव तहसील

में हुई थी। मेरे पिताजी खेती करते थे। कृषि विभाग के अधिकारी- कर्मचारी उनके पास आकर सलाह देते थे। मंत्री श्री पटेल ने अपने आराध्य व पूज्य गुरू श्रीश्रीबाबाश्री की सीख और अनमोल वाणी याद करते हुए बताया कि यह देश कृषि प्रधान नहीं, बल्कि ऋषि प्रधान देश है। इसी परंपरा के आधार पर हम कृषि करते थे। ऋषि परम्परा के पुराने अनुभव को बताते हुए कहा कि एक किसान जिसकी माली हालत ठीक नहीं थी। उसके द्वारा खेत से गाय नही भगाये जाने पर किसान द्वारा यह कहना कि जितना अधिकार मेरे बच्चों को खाने पर है उतना ही अधिकार मेरे खेत में गौमाता का भी है।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि हमें रसायनिक खाद का उपयोग करने की बजाय जैविक खेती करनी चाहिये। यह वर्तमान की आवश्यकता है यदि गाय का गौमूत्र व गोबर नहीं होगा, तो आप जैविक खेती नहीं कर सकते। इसके लिए उन्होंने गौ रक्षा व गौ पालन में स्वअनुशासन की बात की। उन्होंने कहा कि जब वे पूरे देश में कहीं भी जाते थे, तो अपने जिले की तारीफ करते थे कि हमारे यहां का किसान कभी गौवंश को बाहर नही छोड़ता था। लेकिन पिछले 10- 15 साल से हम इस परम्परा निर्वहन नहीं कर पा रहे हैं।

स्वच्छता की नई पहल- वॉश ऑन व्हील्स सेवा की शुरुआत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ग्राम पंचायतों और व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों की सफाई के अभाव में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए छिंदवाड़ा जिला प्रशासन ने एक अभिनव पहल स्वच्छता साथी वॉश ऑन व्हील्स की शुरुआत की है। इस पहल की शुरुआत 26 सितंबर 2024 को राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने ब्लॉक तामिया की ग्राम पंचायत छिंदी से की थी। वॉश ऑन व्हील्स सेवा एक आधुनिक उपकरणों और सुरक्षा गियर का उपयोग करते हुए सफाई मित्रों द्वारा संस्थागत और घरेलू शौचालयों की सफाई की पहल है। यह न केवल स्वच्छता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि स्वच्छता साथियों के लिए सुरक्षित और उत्पादक आजीविका का माध्यम भी बन रही है। यह सेवा ग्राम पंचायतों के सामुदायिक शौचालय, स्कूल, आंगनवाड़ी केंद्र, पंचायत भवन, स्वास्थ्य केंद्र, और हॉस्टल जैसी जगहों पर नियमित सफाई सुनिश्चित करती है। स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के तहत घरेलू शौचालयों की सफाई को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

जिले के सभी 11 ब्लॉकों में 10-10 पंचायतों के सेवा क्लस्टर बनाए गए हैं।

वर्तमान में 11 सेवा क्लस्टर संचालन में हैं। सफाई मित्रों को प्रशिक्षित कर, रूट चार्ट और अनुबंध निर्धारित किए गए हैं। सफाई कार्य के लिए आधुनिक उपकरण जैसे बैटरी और बिजली से चलने वाली वॉशिंग मशीनें, यूनिफॉर्म, दस्ताने, मास्क, हेलमेट, और अन्य सुरक्षा गियर प्रदान किए गए हैं। प्रति शौचालय इकाई के लिए 0-5 किमी दूरी पर 200 रूपये और 5 किमी से अधिक दूरी पर 250 रूपये का शुल्क निर्धारित किया गया है। स्वच्छता साथियों की मासिक आय 25 से 30 हजार तक हो रही है, जिसमें ईंधन और सामग्री की लागत 3 से 3 हजार 500 रूपये है।

ग्राम पंचायत स्तर पर सचिव और अन्य अधिकारी, जबकि ब्लॉक स्तर पर सीईओ और संबंधित अधिकारी सेवा की निगरानी कर रहे हैं। भविष्य में सेवा का विस्तार करते हुए नए क्लस्टर और स्वच्छता साथियों को जोड़ा जाएगा और ऑनलइन व ऑफलाइन बुकिंग सुविधाओं को सशक्त बनाया जाएगा। साथ ही क्यूआर कोड प्रणाली और मोबाइल एप्लीकेशन का विकास भी किया जाएगा।

वॉश ऑन व्हील्स सेवा स्वच्छता के क्षेत्र में एक अभिनव और प्रभावी कदम है। यह न केवल स्वच्छता को बढ़ावा दे रही है बल्कि स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सिंगरौली पहुंचे केंद्रीय कोयला एवं खनिज राज्य मंत्री

जिले के प्रमुख अधिकारियों के साथ की बैठक, दिए दिशा-निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। केंद्रीय कोयला एवं खनिज राज्य मंत्री सतीश दुबे दो दिवसीय दौरे पर गुरुवार को सिंगरौली पहुंचे। उन्होंने दोपहर में जिले के सभी विभाग प्रमुख अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। जिसमें जिले में चल रही केंद्रीय योजनाओं की समीक्षा की गई।

समीक्षा बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सिंगरौली जिला केंद्रीय योजनाओं को लेकर पहले से ही संजीदा हैं और अच्छा काम कर रहा है। जहां भी कमियां दिखी हैं उसके लिए आज अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

उन्होंने आजीविका मिशन के तहत काम करने वाली महिलाओं और संगठनों से भी मुलाकात की। इस बैठक में राज्य मंत्री राधा सिंह सीधी सिंगरौली सांसद, देवसर और सिंगरौली विधायक के सहित कलेक्टर और एसपी समेत जिले भर के अधिकारी मौजूद रहे।

समीक्षा बैठक के अलावा केंद्रीय मंत्री ने डीएमएफ की बैठक ली, जिसमें उन्होंने जिले में डीएमएफ फंड से चल रहे विकास कार्यों की जानकारी हासिल की। उन्होंने डीएमएफ फंड के बारे में कुछ निर्देश अधिकारियों को दिए।

कल एनसीएल हेड क्वार्टर में होने वाली बैठक में होंगे शामिल: केंद्रीय कोयला एवं खनिज राज्य मंत्री का कल का कार्यक्रम एनसीएल हेड क्वार्टर का होगा जहां पर केंद्रीय मंत्री कोयला खनन और उसे हो रहे दुष्प्रभाव की समीक्षा करेंगे।

इसके अलावा जिस तरह से कोयला परिवहन की वजह से सड़क हादसे हो रहे हैं उसकी भी मॉनिटरिंग कैसे हो इस पर विचार-विमर्श होगा।

ठेला व्यापारियों ने घंटों बाधित किया कलेक्ट्रेट मार्ग

नपा ने अस्पताल चौक के अवैध अतिक्रमण को कराया मुक्त, भड़का आक्रोश

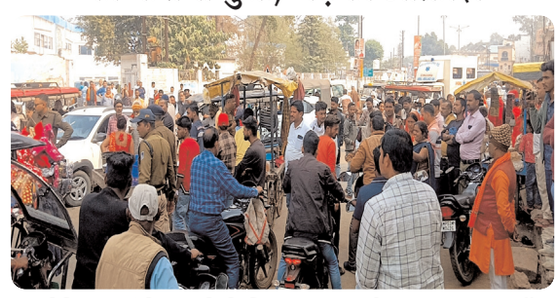

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। गुरूवार की सुबह अस्पताल चौक से कलेक्ट्रेट मार्ग को हॉथ ठेला व्यापारियों ने चक्का जाम कर दिया। नगर पालिका परिषद एवं पुलिस ने घंटो बाद यातायात बहाल किया। सड़क पर ठेला लगा कर व्यापार करने वालों का आरोप था कि नपा कर्मी एक तरफा कार्रवाई करते हैं, उन्हे जानबूझ कर परेशान करने का कार्य किया जा रहा है। वहीं नपा कर्मियों ने बताया कि ये व्यापारी निर्धारित स्थल पर दुकान का संचालन न करते हुए प्रतिदिन सार्वजनिक यातायात मार्ग को वाधित करते हैं। मिनी अग्रवाल सीएमओ नगर पालिका परिषद ने बताया कि यातायात पुलिस एवं स्थानीयजनों की शिकायत के बाद 21 नवम्बर 24 को मुहिम के तहत अस्पताल तिराहे पर यातायात वाधित करने वाले ठेला व्यापारियों को उचित स्थल पर जाने हेतु अनुनय किया गया वहीं सार्वजनिक मार्ग वाधित करने वाले हॉथ ठेला व्यापारियों के विरूद्ध उचित विधिक कार्रवाई की गयी। जिसके बाद नियम विरूद्ध ढंग से कुछ व्यापारियों द्वारा अस्पताल चौक से कलेक्ट्रेट पहुॅच मार्ग को वाधित किया गया। जिसकी जानकारी लगने पर सभी को पूर्व चिहिंत स्थल गॉधी चौक पॉर्किंग स्थल के समीप एवं सम्राट चौक के समीप दुकानो का संचालन करने हेतु रजिस्ट्रेशन प्रकृया प्रारंभ कर दी गयी है। जल्द ही कलेक्ट्रेट मार्ग पर सूखा नाला से सम्राट चौक तक अतिक्रमण मुक्त व्यवस्था सामने आयेगी ।रीता त्रिपाठी यातायात प्रभारी ने बताया कि लगभग एक दर्जन से ज्यादा चिहिंत हॉथ ठेला व्यापारी महिला एवं पुरूष प्रतिदिन सार्वजनिक यातायात को वाधित करते हैं। यातायात के सुचारू संचालन हेतु इनसे कई बार अनुनय विनय किया जा चुका है किन्तु ये कुछ पलो के लिये ठेलो को सड़क से हटा लेते हैं उसके कुछ मिनट बाद पुनः ये सड़क पर ठेला लगाकार दिन भर अपने व्यापार को गति देते हैं। जिसके कारण सार्वजनिक मार्ग वाधित होता है। चाह कर भी नगर वासियों को वाधा रहित यातायात व्यवस्था मुहैया नही हो पा रही है। वहीं 21 नवम्बर 24 को नगर पालिका प्रशासन द्वारा सभी हॉथ ठेला व्यापारियों को निर्धारित स्थल पर स्थानांतरित किया गया है।

प्रेम जाल में फंसाकर बनाया अश्लील वीडियो

ब्लैकमेल कर मांगे 20 लाख रुपए, वायरल होने पर पीड़िता ने युवक के खिलाफ दर्ज कराया मामला

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर के युवक पर शहडोल जिले में निवास करने वाली युवती ने चचाई थाने में दुष्कर्म और अश्लील वीडियो वायरल करने की शिकायत दर्ज कराई गई है। पीड़िता ने बताया कि कॉलेज में पढ़ने के दौरान इंस्टाग्राम के माध्यम से उसकी पहचान शिवम सेन निवासी ग्राम चकेठी के साथ हुई थी। दोनों ने नंबर एक्सचेंज किए और उनके बीच दोस्ती हो गई।

पीड़ित लड़की ने बताया कि 2022 में शिवम सेन पीड़िता को अपने साथ लेकर चंदवार गांव में बड़े पिता के खेत में बने कमरे में लेकर पहुंचा। जहां उसने युवती के साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए और अश्लील वीडियो भी बना लिया। इसके बाद वह पीड़िता को ब्लैकमेल करने लगा कि मुझे 20 लाख रुपए दो नहीं तो वह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दूंगा। उसने रुपए नहीं देने और इस घटना की जानकारी किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी भी दी।

पैसे नहीं मिलने पर आरोपी युवक शिवम सेन ने एक महीने पहले वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। जैसे ही इसकी खबर पीड़िता को मिली उसने थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ धारा 376, 376(2)एन, 384, 323, 506 और आईटी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। मामला दर्ज होते ही आरोपी युवक फरार हो गया है जिसकी तलाश पुलिस के कर रही है।

थाना प्रभारी चचाई एसपी शुक्ला ने बताया कि यह मामला दो साल पुराना हैं। आरोपी ने एक महीने पहले लड़की का वीडियो वायरल किया था। जब पीड़िता को इसकी सूचना मिली, तो उसने मंगलवार को थाने पहुंचकर शिकायत की। बुधवार को आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है।

हनुमान जी की मूर्ति खंडित मिली

नाराज ग्रामीणों ने किया चक्काजाम, 2 घंटे तक रास्ता रोके रहे

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी में कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम शेरपुर में अज्ञात ने हनुमान जी की मूर्ति खंडित कर दी। इससे नाराज लोगों ने गुरुवार दोपहर 1 बजे चक्काजाम कर दिया। 2 घंटे तक आवागमन पूरी तरह से बंद रहा। प्रदर्शन में मझरेठी के लोग भी शामिल रहे। जानकारी लगते ही थाना प्रभारी कोतवाली अभिषेक उपाध्याय टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

ग्रामीण बोले- 30 पुरानी थी हनुमान जी की प्रतिमा: ग्रामीण ऋषभ सिंह ने बताया, हनुमान जी की मूर्ति करीब 30 साल पुरानी थी। ग्रामीणों की मदद से मंदिर का निर्माण भी कराया जा रहा था। इसमें 10 गांवों के लोगों की आस्था है। मंदिर में प्रतिदिन पूजा होती थी।

एक दिन पहले बुधवार देर शाम आरती करने के बाद मंदिर बंद किया गया था। आज सुबह 9 बजे मंदिर का दरवाजा खोला, तो मूर्ति खंडित मिली। जिसने ने भी ये हरकत की है, उसपर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

अज्ञात के खिलाफ केस: एडिशनल एसपी अरविंद श्रीवास्तव ने बताया, अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली पुलिस जांच कर रही है।

15 हजार रुपए लूटने वाले वाले चार आरोपियों को जेल

कट्टे की नोक पर वारदात को दिया था अंजाम, तीन साल बाद कोर्ट ने सुनाई

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अपर एवं सत्र न्यायालय अनूपपुर ने पेट्रोल पंप पर 15 हजार की लूट करने वाले चार आरोपी राजू उर्फ भैया यादव, पिंटू यादव, बेटू यादव और अनिल यादव को 7 साल की जेल और 10 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है।

जिला लोक अभियोजक अधिकारी पुष्पेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि फरियादी प्रकाश यादव शहडोल-कोतमा हाईवे रोड पर मां विरासनी पेट्रोल पंप पर नोजल मैन के पद पर कार्य करता है। 24 मार्च को 2022 को रात करीब 11:30 बजे से 11:45 बजे के बीच दो बाइक सवार चार व्यक्ति विरासनी पेट्रोल पंप पर आए। जिसमें एक व्यक्ति भैया यादव ग्राम हरदी का था। उन्होंने प्रकाश से बोला कि दोनों बाइक में पेट्रोल फुल कर दो। दोनों बाइक में करीब 20 लीटर पेट्रोल भरने के बाद पेट्रोल का पैसा मांगने पर चारों व्यक्ति ने उससे बोला कि जितना पैसा तुम्हारे जेब में हो, निकाल दो।

प्रकाश के पैसे नहीं निकालने पर एक व्यक्ति ने पेंट से कट्टा निकालकर उसके गले में सामने लगा दिया। दूसरे व्यक्ति ने चाकू से उसके बाएं पैर के जांघ पर पीछे दो-तीन बार वार किया। जिससे उसकी जांघ पर लगने से खून बहने लगा। आरोपियों ने उसके जेब में रखे 15 हजार रुपए लूट लिए और कट्टे से फायर करके भाग गए। उसने पंप मालिक को फोन लगाया। उसे इलाज करवाने जिला अस्पताल अनूपपुर ले गया। कोतवाली पुलिस ने धारा 394, 34 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की। आरोपी को गिरफ्तार किया गया। जांच पूरी कर अभियोग-पत्र न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। जहां न्यायालय ने दोषी करार देते हुए चारों आरोपियों को 10-10 साल की सजा सुनाई।

हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान

बहरी में दूसरे सामुदायिक शौचालय का संचालन प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला सीधी अंतर्गत जनपद पंचायत सिहावल में हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान अंतर्गत स्वच्छ बहरी सुंदर बहरी ग्राम पंचायत क्षेत्र बहरी बाजार ग्राम केशवाही साडा भवन के सामने दूसरे सामुदायिक शौचालय का संचालन किया गया। सार्वजनिक शौचालय आधुनिक सर्वसुविधायुक्त है जिसमें बोरबेल, स्नानागार, लेडीज यूरिनल, पुरूष यूरिनल, बिजली, पानी, सहित रखरखाव के लिए कर्मचारी की व्यवस्था की गई है। इसी अभियान अंतर्गत अन्य अक्रियाशील सामुदायिक शौचालय को इसी तरह सुधार करने के निर्देश सीईओ जिला पंचायत द्वारा दिया गया। उक्त सामुदायिक शौचालय का संचालन होने से व्यवसायियों एवं क्षेत्र से आ रहे ग्रामीण जनों को सुविधा मिलेगी एवं बस स्टैंड साडा परिसर में स्वच्छता व्यवस्था मजबूत होगी।

अवैध खाद बिक्री करने वाले 5 लोगों पर एफआईआर दर्ज, 1307 बोरी खाद जब्त, स्टॉक कर के महंगे दामों पर बेच रहे थे

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। जिला प्रशासन ने गुरुवार को अवैध खाद बिक्री करने वाले 3 लोगों के खिलाफ कार्रवाई की है। इससे पहले भी पिछले हफ्ते 2 आरोपियों पर कार्रवाई की गई थी। सभी अवैध तरीके से खाद स्टॉक करके किसानों को महंगे दामों में बेच रहे थे। प्रशासन ने पांचों आरोपियों के पास से 6 लाख रुपए कीमत की 1307 बोरी (65 मीट्रिक टन) खाद जब्त किया है। सभी के खिलाफ ईसानगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई है, जानकारी के अनुसार गुरुवार की दोपहर 700 बोरी अवैध रूप से भण्डारित यूरिया खाद जब्त की गई। राजस्व और कृषि विभाग की टीम ने जब्त खाद की अनुमानित कीमत 1 लाख 86 हजार 550 रुपए बताई है। ईशानगर के बालाजी ट्रेडर्स गोदाम से जब्त अवैध भंडारित यूरिया खाद में संलिप्तता पर तीन संबंधित लोगों पर एफआईआर दर्ज कराई गई है। अशोक रूसिया, हरगोविंद अग्रवाल, और ब्रजकिशोर प्रजापति पर प्रकरण पंजीबद्ध दर्ज कराया गया है। जब्त खाद डबल लॉक छतरपुर में रखवाया गया है।

पहले तीन आरोपियों पर हुई थी कार्रवाई: इससे पहले 17 नवंबर को 50 बोरी खाद अवैध पिकअप गाड़ी से अवैध परिवहन करने संबंधित पर महेश तोमर पर ईशानगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। इसके बाद 18 नवंबर को 557 बोरी अवैध खाद की बोरियां भण्डारित होने पर संतोष अग्रवाल पर ईशानगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। दोनों मामले में 627 खाद की बोरी जब्त की गई थी, जिसकी कीमत 4 लाख 5 हजार रुपए थी।

कलेक्टर पार्थ जैसवाल ने बताया कि ईशानगर थाना में 5 लोगों पर दर्ज एफआईआर की गई है। आरोपियों के पास से 6 लाख से अधिक कीमत, 1307 बोरी (लगभग 65 मीट्रिक टन) खाद की जब्त की गई है।

राशन की दुकान में चोरी, 250 परिवारों का राशन चुराकर ले गए चोर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के सिहावल जनपद पंचायत क्षेत्र अंतर्गत मुर्दाडीह में राशन की दुकान में चोरों ने चोरी कर ली है। बताया जा रहा है कि राशन की दुकान पर 32 क्विंटल चावल, 39 क्विंटल गेहूं, 35 किलो नमक को चोर चुराकर रफूचक्कर हो गए। जिसकी जानकारी स्थानीय निवासी रामफल सिंह ने कोटेदार को गुरुवार के दिन दोपहर 1 बजे दी है।

उन्होंने बताया है कि 21 नवंबर दोपहर में 1 घर से बाहर कोटा की तरफ गया। इसी वक्त देखा कि कोटा का ताला टूटा हुआ है, जो दिखाई नहीं दिया। अंदर जाकर देखा. तो सारा राशन गायब था। इसके बाद मैंने फोन से सूचना राकेश सिंह कोटेदार को दी। जहां जानकारी मिलते ही 15 मिनट के अंदर ही राकेश जी मौके पर पहुंचे और इसकी सूचना पुलिसकर्मियों को दी। जहां मौके पर पुलिस से पहुंच गई है और आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है। कोटेदार राकेश सिंह ने जानकारी देते हुए बताया है कि लगभग 250 परिवार के लिए अभी राशन रखा हुआ था। जिसे लोगों में बांटना था। जहां आज मुझे जानकारी लगी कि कोटा से सारा राशन चोरी हो गया है। कोटा गांव से कुछ दूरी पर है जिसकी वजह से यहां कम लोग आ जा पाते हैं। जिसकी वजह से किसी ने यह बड़ा अपराध किया है और गरीबों का राशन चोरी कर लिया है। जिसकी जानकारी मैंने कमर्जी थाने को दी है। जहां पुलिस ने आकर विवेचना शुरू कर दी है।

वही पूरे मामले को लेकर थाना प्रभारी कमर्जी पवन सिंह ने जानकारी देते हुए बताया है कि मुर्दा डी में राशन की दुकान में चोरी की जानकारी मिली थी जिस पर हमने बीट प्रभारियों को मौके पर भेज दिया है और हम चोरी किए हुए सामान तथा चोर का पता लग रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ में भाषण, निबंध और पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति महाविद्यालय सीधी में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत भाषण, निबंध तथा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन 18 नवंबर से सतत किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा के नोडल अधिकारी डॉ. रामनारायण स्वर्णकार के कुशल नेतृत्व में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही है। 18 नवंबर को भाषण प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. अश्वनी कुमार द्विवेदी द्वारा "भारतीय ज्ञान परंपरा प्रासंगिकता" विषय पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी. के. सिंह द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया गया और छात्रध्छात्राओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। डॉ. अनिल सिंह प्राध्यापक अंग्रेजी ने भारतीय ज्ञान परंपरा प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। भाषण प्रतियोगिताओं में कुल 11 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान अभिनय शर्मा बी.ए. द्वितीय वर्ष, द्वितीय स्थान अंकुश सिंह परिहार बी.ए. तृतीय वर्ष, तृतीय स्थान अनामिका तिवारी बी.ए. तृतीय वर्ष को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता के निर्णयक क्रमशः डॉ. गौरव यादव (अतिथि विद्वान वनस्पति शास्त्र), डॉ. कोमल पाण्डेय (अतिथि विद्वान समाज शास्त्र), डॉ. नागेन्द्र सिंह (सहायक प्राध्यापक हिन्दी) रहे।

निबंध प्रतियोगिता 19 नवंबर को आयोजित हुई जिसके संयोजक डॉ. गुलशेर अहमद रहे। निबंध प्रतियोगिता का विषय "भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति" रहा। इस प्रतियोगिता में कुल 13 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान अंकुश सिंह परिहार बी.ए. तृतीय वर्ष, द्वितीय स्थान आराधना द्विवेदी बी.एससी. द्वितीय वर्ष, तृतीय स्थान अंजली सिंह बी.ए. तृतीय वर्ष को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता के निर्णयक क्रमशः डॉ. कन्हैया लाल प्रजापति (अतिथि विद्वान वनस्पति शास्त्र), डॉ. सत्यप्रकाश शुक्ला (अतिथि विद्वान भौतिक शास्त्र), डॉ. निवेदिता लखेरा (अतिथि विद्वान हिन्दी) रहे है। डॉ. गुलशेर अहमद ने छात्र/छात्राओं को निबंध लेखन के संबंध में मार्ग दर्शन प्रदान किया। भारतीय ज्ञान परंपरा के नोडल अधिकारी डॉ. रामनारायण स्वर्णकार ने छात्र/छात्राओं को निबंध प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बधाई दी।

पोस्टर प्रतियोगिता 20 नवंबर को आयोजित किया गया जिसमें "भारतीय ज्ञान परंपरा पर वैश्विक संस्कृति का प्रभाव" पर छात्र/छात्राओं ने पोस्टर तैयार किया। पोस्टर प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. दिवाकर सिंह ने छात्र/छात्राओं को पोस्टर प्रतियोगिता एवं पोस्टर बनाने के तरीके को समझाया। पोस्टर प्रतियोगिता में कुल 06 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान रौनक सोनी बी.एससी. प्रथम वर्ष, द्वितीय स्थान ज्योति बी.एससी. प्रथम वर्ष, तृतीय स्थान संजय कुमार यादव बी.एससी. प्रथम वर्ष को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता के निर्णयक क्रमशः डॉ. दिवाकर सिंह (सहायक प्राध्यापक वनस्पति शास्त्र), डॉ. नागेन्द्र सिंह (सहायक प्राध्यापक हिन्दी), डॉ. अर्चना सिंह (अतिथि विद्वान अंग्रेजी) रहे है।

उक्त समस्त प्रतियोगिताओं में डॉ. कोमल पाण्डेय, डॉ. विभा कुशवाहा, डॉ. विनोद कुमार साकेत, डॉ. अमित कश्यप, डॉ. कन्हैया लाल प्रजापति, डॉ. सत्य प्रकाश शुक्ला, डॉ. निवेदिता लखेरा, डॉ. संहिता मिश्रा, डॉ. राजेश कुमार विश्वकर्मा, डॉ. राकेश कुमार प्रजापति (सहायक नोडल अधिकारी भारतीय ज्ञान परंपरा), डॉ. प्रतिभा सिंह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। समस्त प्रतियोगिताओं में मनोज कुमार प्रजापति का विशेष योगदान रहा जिन्होंने प्रतियोगिताओं के विभिन्न व्यवस्थाओं को संभाला। भारतीय ज्ञान परंपरा के नोडल अधिकारी डॉ. रामनारायण स्वर्णकार ने समस्त छात्र/छात्राओं को जिनकी उपस्थिति में उक्त कार्यक्रम सम्पन्न हुये धन्यवाद ज्ञापित किया और समस्त प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। यह समस्त प्रतियोगिताएं महाविद्यालयीन स्तर की थी जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे।

हिंदू राष्ट्र के नारे के साथ धीरेंद्र शास्त्री की पदयात्रा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की 'सनातन हिंदू एकता' पदयात्रा हिंदू राष्ट्र के नारे के साथ शुरू हो गई है। यात्रा की शुरुआत बागेश्वर धाम से गुरुवार सुबह 11.15 बजे हुई। धीरेंद्र शास्त्री ने पदयात्रा में शामिल हुए लोगों को अभिवादन किया।इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज, भगवा ध्वज फहराने के साथ ही राष्ट्रगान हुआ। इसके बाद हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया।

ये पदयात्रा पहले दिन ग्राम गढ़ा तिराहा से होते हुए लगभग 20 किमी दूर ग्राम कदारी तक पहुंचेगी। इस दौरान बुंदेली कलाकार लोक कलाओं का प्रदर्शन करेंगे। 9 दिनों में यात्रा बागेश्वर धाम से रामराजा मंदिर ओरछा तक करीब 160 किमी का सफर तय करेगी। यात्रा में कुल 8 पड़ाव होंगे। यात्रा में देश के कई संतों के साथ ही कला क्षेत्र से जुड़ी हस्तियां भी शामिल हैं।

खाद का संकट गहराया, किसान परेशान, ज्यादा कीमत पर खरीदनें को मजबूर

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। रवी फसल की वोनी की शुरुआत हो चुकी है लेकिन किसान डीएपी, यूरिया खाद के लिए दर बदर भटक रहे हैं, प्राइवेट दुकानों में महंगे दामों में खाद बिक रही है, मजबूर किसान परेशान हैं,शासन प्रशासन में कोई सुनने देखने वाला नहीं है, युवा किसान अतुल तिवारी ने बताया कि सोसाइटी एवं समितियों में खाद बीज नहीं मिल रहा है,और जिम्मेदार अधिकारी फोन तक नहीं उठा रहें, बाजारों में महंगें दामों में खाद बिक रही हैं,जिसे किसान मजबूरी में खरीद रहा है,और प्रशासन बेखबर है, तिवारी ने जिला कलेक्टर एवं जिम्मेदार अधिकारियों से जल्द से जल्द खाद की व्यवस्था बनाए जाने की मांग करते हुए कहा है कि अगर खाद की व्यवस्था नहीं बनती तो किसानों के हित में आमरण अनशन पर बैठेंगे।

आदिवासी मजदूर को मिला 20 लाख का हीरा

4 दिसंबर को कलेक्टोरेट में होने वाली नीलामी में रखा जाएगा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। हीरों के लिए मशहूर पन्ना जिले में गरीब आदिवासी मजदूर की किस्मत उस समय चमक गई, जब उसे खदान में बुनाई के दौरान चमचमाता क़ीमती हीरा मिला। वह सीधे हीरा कार्यालय पहुंचा। वहां उसका वजन 5 कैरेट 87 सेंट निकला।इसकी अनुमानित कीमत करीब 20 लाख रुपए बताई जा रही है। दरअसल, बिलखुरा गांव में रहने वाले सुरेंद्र सिंह गौड़ ने कृष्णा कल्याणपुर पटी में उथली हीरा खदान लगाई थी। इसके खुदाई में उसे गुरुवार को 5.87 कैरेट का हीरा मिला। हीरे को सुरेंद्र ने हीरा कार्यालय में जमा कर दिया है। इसे 4 दिसंबर को कलेक्टोरेट में होने वाली नीलामी में रखा जाएगा। हीरा पारखी अनुपम सिंह ने बताया कि दिसंबर में होने वाली नीलामी में कुल 81 नग हीरे बोली के लिए रखे जाएंगे, जिनका वजन 241 कैरेट 47 सेंट है।

विचार

बद से बदतर होती जा रही है चुनावी बयानबाजी

महाराष्ट्र और झारखंड में उम्मीदवारों की किस्मत तय होने के साथ ही, एक कटु और बेबाक प्रचार अभियान का अंत हो गया है। दोनों राज्यों में चुनावों का अंतिम परिणाम चाहे जो भी हो, यह प्रचार अभियान इतिहास में अब तक के सबसे सांप्रदायिक और विभाजनकारी अभियानों में से एक के रूप में दर्ज किया जाएगा। मुझे याद है कि मैंने पिछले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव और पिछले लोकसभा चुनाव के प्रचार अभियान के समाप्त होने के ठीक बाद भी ऐसा कहा था। दुर्भाग्य से, खासकर सांप्रदायिक रंग के साथ राजनीतिक बयानबाजी का स्तर बद से बदतर होता जा रहा है और अभी-अभी सम्पन्न हुए चुनाव अभियान को अब सबसे ज्यादा सांप्रदायिक कहा जा सकता है। दोनों राज्यों, खासकर महाराष्ट्र में हुए चुनावों में भाजपा और उसके गठबंधन सहयोगियों तथा कांग्रेस एवं उसके गठबंधन सहयोगियों दोनों के लिए बहुत कुछ दाव पर लगा था। हरियाणा चुनावों के आश्चर्यजनक परिणाम, जिसमें भाजपा ने सभी को गलत साबित कर दिया और कांग्रेस को पीछे छोड़ दिया, ने महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले अभियान को बढ़ावा दिया। हालांकि, जाहिर है कि भाजपा देश के सबसे समृद्ध और दूसरे सबसे बड़े राज्य को जीतने के लिए कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती थी। कांग्रेस और अन्य गठबंधन दलों को अतीत में नरेंद्र मोदी के लिए 'मौत का सौदागर' जैसे नारे लगाने के लिए दोषी ठहराया जाना चाहिए, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के नेता अपने सांप्रदायिक बयानों और नारों से मीलों आगे हैं। उनके नारे जैसे 'बंटेंगे तो कटेंगे' और 'एक हैं तो सेफ हैं' में स्पष्ट रूप से सांप्रदायिक रंग है जिसे एक बच्चा भी समझ सकता है। अधिक बच्चे पैदा करने वाले या जिनके सदस्य 'घुसपैठिया' हैं और जो मंगलसूत्र, जमीन और सोना छीन लेंगे, उनका संदर्भ स्पष्ट रूप से सांप्रदायिक रंग देता है। इससे पहले लोकसभा चुनावों के दौरान, मोदी ने दावा किया था कि विपक्ष को मिलने वाला हर वोट हिंदुओं द्वारा अर्जित धन का उपयोग उन मुसलमानों को वितरित करने के लिए किया जाएगा जिनके अधिक बच्चे हैं और जो घुसपैठिए हैं, उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस मुसलमानों को हिंदू महिलाओं के 'मंगलसूत्र' भी वितरित कर सकती है। सांप्रदायिक पहलू को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अपने भाषणों में 'घुसपैठियों' को दीमक बताते रहे हैं और आदिवासियों से कहते रहे हैं कि वे अपनी मासूम बेटियों को अपनी तीसरी या चौथी पत्नी बना लेंगे। विडंबना यह है कि पार्टी के नेता जाति जनगणना की मांग को लेकर कांग्रेस और कुछ अन्य दलों की आलोचना करते रहे हैं और कहते रहे हैं कि यह 'विभाजनकारी' है और इससे सामाजिक तनाव पैदा होगा। सबसे मुखर और सबसे सांप्रदायिक नेताओं में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा शामिल हैं। वे कभी भी विकास या प्रगति या यहां तक कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकारों की उपलब्धियों के बारे में बात नहीं करते हैं।

कानूनी दायरे में कैसे लाए जाएं चुनावी वायदे

उमेश चतुर्वेदी

चुनाव घोषणा पत्रों में किए वायदों को पूरा न कर पाने को लेकर साा में आने वाला हर राजनीतिक दल मतदाताओं और विपक्षी दलों के निशाने पर रहा है। मतदाताओं की बढ़ती जागरूकता के चलते इन आलोचनाओं से बचने के लिए राजनीतिक दलों ने अब चुनाव घोषणा पत्र जारी करना बंद कर दिया है। 2012 के उर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में उतरी कांग्रेस ने राज्य के लिए विजन डायुमेंट जारी किया। इसके बाद सभी दलों ने चुनाव घोषणा पत्र के शीर्षक को तकरीबन त्याग दिया। अब भारतीय जनता पार्टी हर चुनाव के पहले संकल्प पत्र जारी करती है तो कांग्रेस अब गारंटियां देने लगी हैं। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में पार्टी ने पांच गारंटी देने का वादा किया। जो उसके लिए बहुत हिट रहा। अब पार्टियां गारंटी देती हैं, दृष्टि पत्र प्रस्तुत करती हैं और संकल्प पत्र प्रस्तुत करती हैं। गारंटी और संकल्प जैसे शद एक तरह से गवाह हैं कि राजनीतिक दलों के वायदों को लेकर मतदाताओं का एक बड़ा अब आलोचनात्मक रूख ही नहीं रखता है, बल्कि उन पर भरोसा भी नहीं

घोषणा पत्र भले ही अब गारंटी या दृष्टि या संकल्प पत्र में तबदील हो गए हों, लेकिन अब भी उनकी साख नहीं बन पाई है। इसकी वजह यह है कि कई बार राजनीतिक दल वोटरों को लुभाने के चक्कर में ऐसे भी वायदे कर डालते हैं, जिन्हें पूरा कर पाना उनके लिए संभव नहीं होता। राजनीतिक दल भी जानते हैं कि संकल्प, दृष्टि या गारंटी पत्र में दिए वायदों को शत-प्रतिशत पूरा करना संभव नहीं है और अगर वे करते भी हैं तो सरकारी अर्थव्यवस्था का चरमरा सकती है। फिर वे वायदे करते हैं या कह सकते हैं कि सत्ता के लक्ष्य को लेकर चलने वाली मौजूदा राजनीति की यह मजबूरी भी है।

चुनाव घोषणा पत्रों और आज के दृष्टि और संकल्प पत्रों में किए वायदों और उन्हें लागू किए जाने को लेकर ठोस शोध जरूरी है। लेकिन मोटे तौर पर इनमें दर्ज ज्यादातर वायदे पूरे हो ही नहीं पाते। इसलिए मतदाताओं के एक वर्ग अलग ढंग से सोचने लगा है। मतदाताओं के एक वर्ग का मानना है कि चाहे जिस भी फ्रेम में चुनाव घोषणा पत्र जारी हों, उन्हें उपभोक्ता कानून के दायरे में लाना चाहिए। जिस तरह किसी प्रोडक्ट का निर्माता अपने प्रोडक्ट को लेकर गारंटी या वारंटी देता है, और जब वे पूरे नहीं होते तो उसके प्रोडक्ट खरीदने वाले उत्पादक के खिलाफ उचित फोरम में जाकर शिकायत दर्ज करा सकते हैं, उसी तरह चुनावी घोषणा पत्रों को लेकर भी कानून होने चाहिए। इस वर्ग का मानना है कि एक फोरम ऐसा भी होना चाहिए, जिसे कानूनी ताकत हासिल हो और जो चुनावी वायदाखिलाफी की सुनवाई कर सके।

चुनाव घोषणा पत्रों की स्थिति संविधान के नीति निर्देशक तत्वों की तरह ही है। नीति निर्देशक तत्व राज्य से लोक हित के तमाम कदम उठाने को लेकर उम्मीद तो करता है, लेकिन राज्य के लिए ऐसा करना अनिवार्य नहीं बनाता। नीति निर्देशक तत्वों के तहत राज्य या सरकार कदम नहीं उठाती तो किसी को भी किसी भी अदालत में इसकी शिकायत की ना तो अनुमति है और ना ही कोई अदालत ऐसी सुनवाई कर भी सकती है। चुनाव घोषणा पत्रों की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। हालांकि ऐसा नहीं है कि चुनाव घोषणा पत्रों को लेकर अदालतों के सामने सवाल नहीं उठे। चुनाव घोषणा पत्र को लेकर दाखिल एक याचिका पर सुनवाई के बाद सुप्रीम कोर्ट ने 5 जुलाई 2013 को अपना फैसला सुनाया था। एस. सुब्रमण्यम बालाजी बनाम तमिलनाडु सरकार और अन्य के मामले में देश की सबसे बड़ी अदालत ने चुनाव आयोग को सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की सलाह से चुनावी घोषणापत्र के संबंध में दिशा-निर्देश तैयार करने का निर्देश दिया था। इस फैसले में कोर्ट ने कहा था,

चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के बीच समान अवसर सुनिश्चित करने और यह देखने के लिए कि चुनाव प्रक्रिया की पवित्रता पर आंच ना आए, घोषणापत्र को लेकर निर्देश जारी करे। जैसे आयोग आदर्श आचार संहिता के निर्देश जारी करता है।

आयोग के पास संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए ऐसे आदेश दे सकता है।

अदालत को पता है कि सामान्यतया राजनीतिक दल मतदान के पहले चुनाव घोषणा पत्र जारी करते हैं, ऐसी स्थिति में चुनाव आयोग के पास किसी भी कार्य को रेगुलेट करने का अधिकार नहीं होता है। फिर भी, घोषणा पत्र को लेकर अपवाद बनाया जा सकता है, क्योंकि चुनावी घोषणापत्र का उद्देश्य सीधे चुनाव प्रक्रिया से जुड़ा होता है।

इसके बाद चुनाव आयोग ने राजनीतिक दलों से विचार-विमर्श के बाद साल 2015 में चुनाव घोषणा पत्र को लेकर गाइड-लाइन जारी की थी। इसके अनुसार,

चुनाव घोषणापत्र में संवैधानिक आदर्शों और सिद्धांतों से इतर कुछ भी नहीं होगा और यह आदर्श आचार संहिता के अन्य प्रावधानों की भावना के अनुरूप होगा।

संविधान में निहित राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के तहत राज्यों को नागरिकों के लिए विभिन्न कल्याणकारी उपाय करने के आदेश हैं, इसलिए चुनावी घोषणा पत्रों में ऐसे कल्याणकारी उपायों के वायदे पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। हालांकि, राजनीतिक दलों को ऐसे वादे करने से बचना चाहिए, जिनसे चुनाव प्रक्रिया की शुचिता पर असर पड़ सकता है या मतदाताओं पर उनके मताधिकार का प्रयोग करने में अनुचित प्रभाव पड़ने की आशंका हो।

पारदर्शिता, समान अवसर और वायदों की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए अपेक्षा की जाती है कि घोषणापत्र में किए गए वादे स्पष्ट हों और इसे पूरा करने के लिए वित्तीय संसाधन कैसे जुटाए जाएंगे, इसकी भी जानकारी हो। मतदाताओं का भरोसा उन्हीं वादों पर हासिल करना चाहिए, जिन्हें पूरा किया जाना संभव हो।

दुर्भाग्यवश चुनाव आयोग की गाइड लाइन भी बहुत प्रभावी नहीं हो पा रही है। हवा-हवाई वायदे भी खूब किए जा रहे हैं। इनमें रोजगार और नौकरियों को लेकर की जाने वाले वायदे पहले नंबर पर हैं। कल्याणकारी योजनाएं भी इसी कैटेगरी में आती हैं। लेकिन बहुत कम राजनीतिक दल ऐसे हैं, जो कल्याणकारी योजनाओं से संबंधि वायदे करते वक्त उन्हें पूरा करने के लिए जुटाई जाने वाली रकम और उनके स्रोत और तरीकों की जानकारी नहीं देते। मतदाताओं की बढ़ती जागरूकता का दबाव ही है कि कल्याणकारी योजनाओं को लेकर वायदे खूब हो रहे और हर राजनीतिक दल अपने ढंग से लागू भी कर रहा है। भले ही राज्य के खजाने की हालत खस्ता ही क्यों ना हो जाए। लेकिन यह भी सच है कि उस पर खर्च होने वाले फंड के स्रोत को लेकर जानकारी नहीं दी जा रही। साफ है कि चुनाव आयोग की गाइड लाइन इस संदर्भ में नाकाम लग रही है। मौजूदा आर्थिकी में लाभ पर जोर है, रोजगार का सवाल लगातार पीछे छूटता जा रहा है। इसे उलटबांसी ही कहेंगे कि राजनीतिक दल इसी आर्थिकी को आगे बढ़ाने के साथ ही हवाई वायदों की फेहरिस्त भी जारी करते रहते हैं। चूंकि वोटरों के हाथ बंधे हुए हैं, इसलिए वे भी सवाल उठाने से ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। यहां पर याद आता है, संविधानसभा के सदस्य अनंत शयनम अयंगार के वे शब्द, जो उन्होंने नीति निर्देशक तत्वों पर अदालती चाबुक के तर्क के विरोध में दिया था। तब उन्होंने जनता की ताकत पर भरोसा जताते हुए कहा था कि पांच साल में एक बार जब चुनाव होंगे, तब मतदाताओं के लिए यह विकल्प होगा कि वे उन्हीं लोगों को न चुनें जो जनता की राय से अलग हैं। लेकिन क्या ऐसा हो पा रहा है? निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है। ऐसे में सवाल उठता है कि फिर हवाई वायदे ना हों और जो किए जाएं, उन्हें लागू कैसे किया जाए? निश्चित तौर पर इसके लिए एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग को भी आगे आना होगा। मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था इस आत्म नियंत्रण करने से रही। चूंकि वायदों में ही सबका फायदा है, इसलिए कोई भी दल बिल्ली के गले घंटी बांधने के लिए आगे आने की हिम्मत नहीं दिखा पाएगा।

कातिल सड़कों पर तबाह होता जीवन एक गंभीर चुनौती

ललित गर्ग

अलीगढ़ में सड़क हादसा, यमुना एक्सप्रेसवे पर बस-ट्रक भिड़ी, 5 की मौत, 15 से अधिक घायल। राजस्थान में पाली-जोधपुर हाइवे पर मरीज को एक एम्बुलेंस से दूसरे में शिफ्ट करते समय डम्पर ने मारी टक्कत, चार की मौत। दिल्ली के सिग्नेचर ब्रिज पर एक दर्दनाक सड़क हादसे में जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के दो मेडिकल छात्रों की मौत। लखनऊ में दो अलग-अलग सड़क हादसों में वृद्धा समेत दो की मौत। उत्तराखंड के देहरादून में 12 नवंबर को हुए सड़क हादसे में 6 छात्रों की मौत। ऐसे अनेक सड़क हादसे पिछले दो-तीन दिन में हुए है। वाकई भारत की सड़कों पर चलना अब जान हथेली में रखकर चलने जैसा ही होता जा रहा है। ये कातिल सड़क हादसे गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि ऐसी दुर्घटनाओं में निर्दोष लोग ही मारे जाते हैं। देश की इन कातिल एवं खूनी सड़कों की हकीकत बताता केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय का एक डराने वाला आंकड़ा पिछले दिनों सामने आया। मंत्रालय के अनुसार पिछले दस सालों में हुए सड़क हादसों में 15 लाख लोग मारे गए। कमोबेश सारे देश में ऐसी घटनाएं सुनने में आती हैं जिनमें रोज सैकड़ों लोगों की जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

भारत का सड़क यातायात तमाम विकास की उपलब्धियों एवं प्रयत्नों के बावजूद असुरक्षित एवं जानलेवा बना हुआ है, सुविधा की खूनी एवं हादसे की सड़कें नित-नयी त्रासदियों की गवाह बन रही है। भारत में सड़क दुर्घटनाएं मौतों और चोटों के प्रमुख कारणों में से एक रही हैं। स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत की जीडीपी का करीब तीन से पांच फीसदी हिस्सा सड़क हादसों में लगा है। न केवल भारत बल्कि विश्व में सड़क यातायात में मौत या जख्मी होना कुछ बहुत बड़ी परेशानियों में से एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर वर्ष 13 लाख से अधिक लोग सड़क हादसों के शिकार व्यक्ति की मौत हो जाती है। ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि देश में हर दस हजार किलोमीटर पर मरने वालों की दर 250 है जबकि अमेरिका, चीन और आस्ट्रेलिया में यह संख्या 57, 119 व 11 है। निश्चित रूप से भारत में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों का यह आंकड़ा एक संवेदनशील व्यक्ति को हिलाकर रख देता है। सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मौतें भारत में होती है।

परिवहन नियमों का सख्ती से पालन जरूरी है, केवल चालान काटना समस्या का समाधान नहीं है। देश में 30 प्रतिशत ड्राइविंग लाइसेंस फर्जी हैं। परिवहन क्षेत्र में भारी भ्रष्टाचार है लिहाजा बसों का ढंग से मेनटेनेंस भी नहीं होता। इनमें बैठने वालों की जिंदगी दांव पर लगी होती है। देश भर में बसों के रख-रखाव, उनके परिचालन, ड्राइवरों की योग्यता और अन्य मामलों में एक-समान मानक लागू करने की जरूरत है, तभी देश के नागरिक एक राज्य से दूसरे राज्य में निश्चिंत होकर यात्रा कर सकेंगे। तेज रफ्तार से वाहन दौड़ाने वाले लोग सड़क के किनारे लगे बोर्ड पर लिखे वाक्य 'दुर्घटना से देर भली' पढ़ते जरूर हैं, किन्तु देर उन्हें मान्य नहीं है, दुर्घटना भले ही हो जाए। दुनिया की जानी-मानी पत्रिका 'द लांसेट' में इस मसले पर केंद्रित एक अध्ययन में बताया गया है कि भारत में सड़क सुरक्षा के उपायों में सुधार लाकर हर साल तीस हजार से ज्यादा लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है। अध्ययन के मुताबिक, खुनी सड़कों एवं त्रासद दुर्घटनाओं के मुख्य कारण हैं- वाहनों की बेलगाम या तेज रफ्तार, शराब पीकर गाड़ी चलाना, हेलमेट नहीं पहनना और सीट बेल्ट का इस्तेमाल नहीं करना शामिल हैं।

भले ही हर सड़क दुर्घटना को केन्द्र एवं राज्य सरकारें दुर्भाग्यपूर्ण बताती है, उस पर दुख व्यक्त करती है, मुआवजे का ऐलान भी करती है लेकिन बड़ा प्रश्न है कि दुर्घटनाएं रोकने के गंभीर एवं प्रभावी उपाय अब तक क्यों नहीं किए जा सके हैं? जो भी हो, सवाल यह भी है कि इस तरह की तेज रफ्तार सड़कों पर लोगों की जिंदगी कब तक इतनी सस्ती बनी रहेगी? सचाई यह भी है कि पूरे देश में सड़क परिवहन भारी अराजकता का शिकार है। सबसे भ्रष्ट विभागों में परिवहन विभाग शुमार है। भारत में साल 2022 में सड़क हादसों में 1,68,491 लोगों की मौत हुई थी. वहीं, साल 2023 में सड़क हादसों में करीब 1,73,000 लोगों की मौत हुई. यानी, साल 2023 में हर दिन औसतन 474 लोगों की मौत हुई। परिवहन मंत्रालय की ऐसी जानकारी चौंकाती भी है एवं शर्मसार भी करती है। इन त्रासद आंकड़ों ने एक बार फिर यह सोचने को मजबूर कर दिया कि आधुनिक और बेहतरीन सुविधा की सड़के केवल रफ्तार एवं सुविधा के लिहाज से जरूरी हैं या फिर उन पर सफर का सुरक्षित होना पहले सुनिश्चित किया जाना चाहिए। वर्ष 2012 में करीब 16 करोड़ गाड़ियां रजिस्टर्ड थी जो पिछले एक दशक में दुगुनी हो गई हैं। लेकिन उस अनुपात में सड़कें नहीं बढ़ीं। जहां वर्ष 2012 में देश में भारतीय सड़कों की लंबाई 48.6 लाख किलोमीटर थी, तो वर्ष 2019 में यह 63.3 लाख किलोमीटर तक जा पहुंची थी।

खूनी सड़कों में सबसे शीर्ष पर है यमुना एक्सप्रेस-वे। इस पर होने वाले जानलेवा सड़क हादसे कब थमेंगे? यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि इस पर होने वाली दुर्घटनाओं और उनमें मरने एवं घायल होने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। यही नहीं, देश की अन्य सड़के इसी तरह इंसानों को निगल रही है, मौत का ग्रास बना रही है। इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। सड़क दुर्घटनाओं में लोगों की मौत यही बताती है कि अपने देश की सड़कें कितनी अधिक जोखिम भरी हो गई हैं। बड़ा प्रश्न है कि फिर मार्ग दुर्घटनाओं को रोकने के उपाय क्यों नहीं किए जा रहे हैं? सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय लोगों के सहयोग से वर्ष 2025 तक सड़क हादसों में 50 प्रतिशत की कमी लाना चाहता है, लेकिन यह काम तभी संभव है जब मार्ग दुर्घटनाओं के मूल कारणों का निवारण करने के लिए ठोस कदम भी उठाए जाएंगे। कुशल ड्राइवरों की कमी को देखते हुए ग्रामीण एवं पिछड़े इलाकों में ड्राइवर ट्रेनिंग स्कूल खोलने की तैयारी सही दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन इसके अलावा भी बहुत कुछ करना होगा।

किन्नर मठ प्रमुख बनने तपस्या ने करवाया काजल का मर्डर

12 लाख में हायर किए किलर्स, चाकू मारकर खदान में फेंकी थी लाश

मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार एजेंसी। रायपुर में जोरा स्थित किन्नर मठ का प्रमुख बनने मुंबई की किन्नर तपस्या ने 12 लाख की सुपारी देकर काजल का मर्डर करवाया। बलौदाबाजार में काजल को चाकू से वार कर मारा गया, फिर लाश को ढाबाडीह इलाके में बंद पड़े पत्थर खदान के बाहर फेंका गया। सोमवार 18 नवंबर को काजल उर्फ कोका कोला की लाश मिली थी, जो रायपुर के जोरा स्थित किन्नर डेरा में रहती थी। पुलिस ने मर्डर के आरोप में दो किन्नर और बजरंग दल के कार्यकर्ता सहित कुल पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में पता चला कि मर्जर का पूरा प्लान करीब दो महीने पहले ही तैयार कर लिया गया था।

तपस्या (36 साल, मोहम्मद इमरान भोईर) जोरा के किन्नर मठ में काजल के साथ ही रहती थी। दरअसल, मामला कुछ ऐसा है कि मूलतः मुंबई, महाराष्ट्र की रहने वाली किन्नर तपस्या की इच्छा जोरा स्थित किन्नर मठ की मठाधीश बनने की थी। लेकिन लोकल रायपुर और सीनियर होने के कारण काजल का मठाधीश बनना लगभग तय था।

ऐसे में काजल को रास्ते में हटाने के लिए तपस्या ने मठ में ही रहने वाले एक दूसरे किन्नर निशा श्रीवास को अपने पाले में लिया। इसके बाद गणेश उत्सव के दौरान तपस्या ने सुपारी के 12 लाख रुपयों का इंतजाम किया, फिर ये पैसा निशा को दिए गए।

निशा ने ड्राइवर के जरिए हायर किए किलर्स: निशा ने काजल के मर्डर के लिए सुपारी किलर हायर करने का जिम्मा अपने ड्राइवर हिमांशु बंजारे को सौंपा। हिमांशु ने 6 लाख में एक किलर हायर तो कर लिया, लेकिन ऐन मौके पर ये किसी दूसरे मामले में जेल चला गया। इसके बाद हिमांशु ने रायपुर के ही रहने वाले कुलदीप कुमार और अंकुश चौधरी को काजल के मर्डर की सुपारी दी।

हत्या के दो दिन पहले निशा ने क्राइम स्पॉट की रेकी की: किलर हायर करने के बाद बलौदाबाजार के पत्थर खदान में काजल की हत्या करने का प्लान तय किया गया। क्राइम स्पॉट का मुआयना हत्या के दो दिन पहले यानी 15 नवंबर को खुद निशा ने जाकर किया था। इसके बाद निशा ने

काजल से कहा कि उसे बलौदाबाजार में अपने एक पहचान वाले से तीन लाख रुपए लेने हैं। साथ चलने पर वो उसे डेढ़ लाख रुपए देगी। काजल तैयार हो गई। इसके बाद 17 नवंबर को निशा की ही अर्टिगा कार से दोनों बलौदाबाजार के लिए रवाना हुए। इस दौरान हिमांशु कार ड्राइव कर रहा था। कार के पीछे कुलदीप और अंकुश अपनी बाइक लेकर चल रहे थे।

रात के अंधेरे में पीठ पर घोंपा चाकू और खदान में फेंक दिया: अमेरा गांव के पास निशा ने कार रुकवाई। यहां कुलदीप और अंकुश को अपना पहचान वाला बताकर उनसे तीन लाख रुपए लिए, जिसमें से डेढ़ लाख उसने काजल को दे दिए। ये सब कुछ काजल का विश्वास जीतने के लिए प्लानिंग के तहत किया जा रहा था।

इसके बाद घूमने के बहाने हिमांशु और निशा ने काजल को बंद पड़े पत्थर खदान पर लाया। तीनों जब तक यहां पहुंचे तो काफी अंधेरा हो चुका था। पीछे से अंकुश और कुलदीप भी पहुंचे। इन दोनों के खदान में पहुंचते ही हिमांशु और निशा कार पर सवार हुए और काजल को वहीं छोड़कर फरार हो गए।

काजल कुछ समझ पाती उससे पहले ही अंकुश और कुलदीप ने उसके पीठ पर चाकू घोंप दिया। हत्या के बाद दोनों ने इस पूरे किस्से को सुसाइड दिखाने के लिए काजल की लाश को खदान के नीचे भरे पानी में फेंक दिया।

आरोपियों के पास से एक कार और दस लाख से ज्यादा कैश बरामद: एसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि आरोपी पूरे मामले को सुसाइड दिखाने चाहते थे। लेकिन बॉडी पर मिले जख्म और फॉरेंसिक टीम की जांच के बाद क्लियर हो चुका था कि मर्डर हुआ था। पुलिस ने अपनी जांच इसी एंगल से आगे बढ़ाई। पता चला कि काजल की गुमशुदगी की रिपोर्ट तेलीबांधा थाने में दर्ज कराई गई थी।

इसके बाद सायबर टीम की मदद ली गई। जिसमें काजल और निशा की लास्ट लोकेशन एक थी। शक के आधार पर पूछताछ की गई तो पूरे मामले का खुलासा हुआ। आरोपियों के पास से 10 लाख 50 हजार रुपए कैश सहित क्राइम में उपयोग किए गए बाइक, कार और हथियार को बरामद कर लिया है।

धर्मांतरण पर पास्टर बोले- झूठा आरोप लगा रहे

कहा- न जबरदस्ती, न कोई लालच...समस्या दूर नहीं हुई तो लोग वापस भी गए

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में बीते डेढ़ महीने में धर्मांतरण के 4 मामले सामने आ चुके हैं। इसके बाद से धर्म परिवर्तन का मामला तुल पकड़ने लगा। पिछले दिनों धर्म सभा से लोगों को थाने लाया गया। दूसरे दिन धर्म सभा में मौजूद लोग भी थाना पहुंचकर धर्म परिवर्तन नहीं कराने की बात कहने लगे। ऐसे में लोगों का धर्मांतरण हो रहा है या नहीं इसके लिए उनसे बात भी की। दोनों ही संगठनों के अलग-अलग बयान सामने आए। प्रार्थना सभा कराने वाले पास्टर का कहना था कि ऐसा कुछ भी नहीं है और धर्मांतरण को लेकर जबरन कुछ दल अपना मतलब निकालने के लिए उनके उपर झूठा आरोप लगा रहे हैं। वहीं हिंदू परिषद ने लंबे समय से रैकेट चलने की बात कही।

ग्रामीण क्षेत्र नहीं बल्कि शहर में मामला आया सामने: धर्मांतरण का मामला अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में देखने सुनने को मिलता है, लेकिन इस बार शहर में चार ऐसे मामले सामने आए। जिसमें पहला मामला दरोगा पारा 14 अक्टूबर को आया। यहां एक घर में प्रार्थना कराया जा रहा था। इसके बाद हिंदू संगठनों द्वारा 3 नवंबर को मिट्ठुमुड़ा में धर्मसभा को बंद कराया। शहर के सुभाष चैक स्थित एक घर में 4 नवंबर को मालीश करने वाले युवक को धर्म परिवर्तन कराने के आरोप में पकड़ा गया और उसके बाद 10 नवंबर को गांधीनगर में धर्मसभा को रोकवाकर कई लोगों को घर से निकलवाया गया था।

न किसी को लालच दे रहे न जबरदस्ती करते: ईसाई समाज के पास्टर बीजोसे का कहना है कि संविधान में अधिकार दिया गया है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से बदल सकते हैं, लेकिन हम जो मसीही समाज के लोग या पास्टर हैं वे किसी को लालच नहीं देते। जबरदस्ती नहीं करते कि वो अपना धर्म परिवर्तन करे। उनका कहना है कि कुछ दल अपना मतलब निकालने के लिए हम पर झूठा आरोप लगाते हैं, लेकिन आज तक जितने भी आरोप लगे हैं, जितने भी कोर्ट में केस चल रहे हैं, एक भी पास्टर के खिलाफ यह साबित नहीं हुआ कि उसने किसी को लालच दिया है। लोग अपनी आस्था से उनकी प्रार्थना सभा में आते हैं। संविधान हमें अधिकार दे रहा है कि कोई भी मंदिर या मस्जिद में जाए। कोई दूसरे जगह गए और समस्या ठीक नहीं हुई, तो हमारे प्रार्थना सभा में आते हैं और किसी की समस्या दूर नहीं होती है तो वापस भी चले जाते हैं।

तेजी से बढ़ रहा धर्मांतरण: विश्व हिंदू परिषद के नगर अध्यक्ष सुनील तीर्थानी का कहना है कि धर्मांतरण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। ये लोग हिंदु समाज के लोगों को टारगेट कर रहे हैं और उन्हें कई तरह के लालच दे कर और हिंदू भाइयों व आदिवासी लोगों को भ्रम देकर बहलाफुसला कर धर्मांतरित कराते हैं। कोई भी बीमारी चिकित्सा से ही ठीक हो सकती है। धर्मांतरण का खेल खेलने वाले हिंदू देवी-देवताओं के बारे में गलत बोलते हैं। हिंदू संगठन के लोग विरोध कर रहे हैं और सामने आ रहे हैं तो इसका खुलासा हो रहा है।

प्रवचन ने जीवन बदल दिया: धर्मसभा में जाने वाले सियराम कुर्रे का कहना है कि मैं हिंदु समाज का हूं, लेकिन मसीह को मानता हूं। अपनी स्वेच्छा से प्रार्थना सभा में जाता हूं और प्रार्थना सुनता हूं। उनका कहना है कि हमारा कोई धर्म परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रवचन के द्वारा हमारे जीवन को बदला है और प्रभु ईसु पर आस्था रखकर जाते हैं।

हाईवा ने प्रतियोगी छात्र को कुचला, मौत

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में गुरुवार को तेज रफ्तार हाईवा ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी, जिससे युवक का सिर हाईवा के नीचे आ गया। जिससे उसकी मौत हो गई। घटना सरकंडा थाना क्षेत्र की है। दरअसल, शहर में नो एंट्री में बेधड़क भारी वाहन दौड़ रहे है, जिससे आए दिन दुर्घटना होने की आशंका बनी रहती है। फिर भी जिम्मेदार अफसर इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जानकारी के अनुसार कोटा के पिपरतराई निवासी संजय कुर्रे (25) पिता सोन दास कुर्रे सिक्यूरिटी गार्ड का काम करता था। इसके साथ ही वो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कर रहा था। गुरुवार दोपहर वो सीपत चौक से राजकिशोर नगर तरफ जा रहा था। अभी बाइक सवार युवक अशोक नगर चौक के पास पहुंचा था। उसी समय तेज रफ्तार हाईवा ने उसे कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

भीड़ ने पुलिसवालों का कॉलर पकड़ा, हाथ उठाया

सेंट्रल जेल में लूट के आरोपी की बिगड़ी तबीयत, परिजन बोले- पुलिस ने पीटा

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। भिलाई के स्मृति नगर थाने का डेरा बस्ती के 100 से अधिक लोगों ने घेराव कर दिया। पुलिसवालों के साथ नशे में जमकर हुज्जतबाजी की। चौकी प्रभारी और सीएसपी से धक्कामुक्की की गई। जिसके बाद भीड़ को तितर-बितर करने पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। दरअसल लूट के मामले में फरीद नगर स्थित बस्ती से एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया था। बुधवार को दुर्ग सेंट्रल जेल में आरोपी की तबीयत बिगड़ने पर उसे रायपुर मेकाहारा में भर्ती कराया गया। जैसे ही आरोपी के परिजनों को इसकी जानकारी मिली, उन्होंने चौकी का घेराव कर दिया। उनकी माने तो आरोपी पिंटू नेताम को पुलिसकर्मियों ने पीटा है।

पुलिस से धक्कामुक्की करती रही भीड़: सीएसपी सत्यप्रकाश तिवारी के मुताबिक 16 अक्टूबर को लूट की एक घटना हुई थी। स्मृति नगर चौकी ने इसमें लूट और अपहरण का मामला दर्ज किया था। पुलिस ने इस मामले में डेरा बस्ती निवासी पिंटू नेताम को गिरफ्तार कर उसके पास से लूट का मोबाइल और नगद रकम जब्त किया था।

मछली पालन को नई ऊंचाई पर ले जाने की दिशा में विष्णुदेव साय सरकार

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ जो भारत के भौगोलिक क्षेत्र का 4.14 प्रतिशत हिस्सा है, जलवायु और जल संसाधनों के कारण मछली पालन के लिए उपयुक्त है। राज्य में 43 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित है। राज्य को तीन हिस्सों में बांटा गया है। उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र, मध्य मैदानी क्षेत्र और बस्तर पठार। महानदी, इंद्रावती और सहायक नदियां मछली पालन के लिए आधार बनाती हैं।

छत्तीसगढ़ में 2.10 लाख लोग मछली पालन से जुड़े हैं। 1,27,269 ग्रामीण तालाब और 1,770 सिंचाई जलाशयों में से 92 प्रतिशत जलक्षेत्र

मत्स्य पालन में उपयोग हो रहा है। 2023-24 तक 418.07 करोड़ मत्स्य बीज का उत्पादन हुआ, जबकि 2024-25 का लक्ष्य 546 करोड़ है। जिसमें विशेष उपलब्धि 2007-08 में 1.39 लाख टन मत्स्य उत्पादन 2022-23 में 7.30 लाख टन हो गया। 2.20 लाख लोग मछली पालन में लगे हैं। आधुनिक तकनीक, जैसे केज कल्चर और बड़े फिंगरलिंग का उपयोग कर के उत्पादन को बढ़ा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में मछली पालन का क्षेत्र जो कभी केवल पारंपरिक व्यवसाय के रूप में देखा जाता था, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की दूरदृष्टि के कारण अब राज्य की आर्थिक और सामाजिक समृद्धि का केंद्र बन रहा है। विश्व मात्स्यिकी दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री ने मछुआरों और मछली किसानों के योगदान को सराहा और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। यह दिन छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मछली पालन के महत्व को रेखांकित करता है और इस क्षेत्र के विकास की संभावनाओं को प्रदर्शित करता हैं। छत्तीसगढ़ की नदियां, तालाब और जलाशय मछली पालन के लिए अत्यधिक उपयुक्त हैं। राज्य का मछुआरा समुदाय और मछली किसान इस क्षेत्र की रीढ़ हैं। उनकी आजीविका इस व्यवसाय पर निर्भर है, और वे राज्य के खाद्य और पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

युवाओं और बुजुर्गों ने सुनाए सुरमयी गीत

स्वदेशी मेले में वाइस ऑफ बिलासपुर कम्पीटीशन का आयोजन, आज आएंगे डिप्टी सीएम

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर के साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित स्वदेशी मेले में बुधवार को वॉइस ऑफ बिलासपुर का आयोजन किया गया। इस दौरान देर रात तक सुरमयी गीतों से समां बांधा। कार्यक्रम में युवाओं से लेकर बुजुर्ग कलाकारों ने भाग लिया। वहीं, रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने आकर्षक और संदेशात्मक रंगोली सजाई। अधिकांश रंगोली में आदिवासी संस्कृति की झलक देखने को मिली।

स्वदेशी जागरण मंच की ओर से आयोजित 6 दिवसीय आयोजन का गुरुवार को समापन होगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डिप्टी सीएम व गृह मंत्री विजय शर्मा शामिल होंगे। बुधवार को लोक माता अहिल्या देवी होल्कर की त्रि-शताब्दी जयंती समारोह का आयोजन किया। इसमें तेजस्विनी छात्रावास की बालिकाओं ने अहिल्या देवी की जीवन पर आधारित गीत-हे कर्मयोगिनी राजयोगिनी जय तू अहिल्या माता..., अहिल्या कर्मयोग भक्ति अहिल्या राजयोग भक्ति..पेश कर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।

वॉइस ऑफ बिलासपुर में सुरमयी गीतों दी प्रस्तुति: वॉइस ऑफ बिलासपुर में बिलासपुर के साथ ही मुंगेली, जांजगीर-चांपा जिले के भी प्रतिभागी शामिल हुए। इसमें 15 साल की लड़की और लड़के से लेकर 55 साल के बुजुर्गों ने अपनी सुरमयी आवाज से लोगों को बांधे रखा। इस दौरान पहले राउंड के प्रतिभागियों से 30 प्रतिभागियों का चयन फाइनल राउंड के लिए किया गया। जिसमें उन्होंने देशभक्ति, फिल्मी गानों से मेले की शाम को सुरमई बना दिया। यह आयोजन देर रात तक चलता रहा। गिरीश त्रिवेदी, तरुण शर्मा, प्रमोद रजक वॉइस ऑफ बिलासपुर के निर्णायक रहे। वहीं, आयोजन में स्वष्टरुके चीफ विजिलेंस ऑफिसर हिमांशु जैन भी शामिल हुए।

आज भी प्रासंगिक है अहिल्या देवी होल्कर: मुख्य वक्ता सुलभा देशपाण्डे ने कहा कि, अहिल्या देवी होल्कर का जीवन आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपनी प्रतिभा से ऊंचाईयां प्राप्त की। धरा को पुण्य भूमि बनाने का काम किया। एक बार शिव आराधना करने जा रही अहिल्या देवी ने पशुओं की भीड़ से शिव भगवान को बचाते हुए निकल गई थी। युद्ध में पति के जाने के बाद वह सती होने के लिए तैयार हो गई थी। फिर उनके ससुर द्वारा व्यक्तिगत जीवन से राष्ट्र, लोक जीवन श्रेष्ठ होता है। समझाइश देने पर सती होने के निर्णय को वापस लिया और धैर्य नहीं खोया। उनकी सोच थी कि राज्य अपना है। प्रजा पुत्रवत है। इसे संभालना मेरा कर्त्तव्य है। इस बात को वह अपने जीवन के अंतिम क्षण तक नहीं भूलाया। इस मौके पर दिग्विजय भाकरे, सुशील श्रीवास्तव, देवेंद्र कौशिक, सन्नी केसरी, युगल शर्मा, चंद्रप्रकाश बाजपेई, अरूणा दीक्षित, किरण मेहता, प्रभा बाजपेई, मीना गोस्वामी, उषा किरण बाजपेई, आरती अनंत, उषा भांगे सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

रंगोली में दिखी आदिवासी संस्कृति की झलक: मेले में रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रतिभागियों ने आकर्षक व संदेशात्मक रंगोली सजाई। अधिकांश रंगोली में आदिवासी संस्कृति की झलक देखने को मिली। निर्णायक चुन्नी मौर्य, छाया कार्डेकर ने रंगोली की थीम व फिनिशिंग के आधार पर स्थान दिया। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने राम मंदिर, आदिवासी महिला, पीएम मोदी, छत्तीसगढ़ी फोक आर्ट, बस्तरिहा आदिवासी डांस, सेव अर्थ, विविध तरह की सीनरी, भारत की सशक्त नारी सहित अन्य कई तरह की रंगोली सजाई। रंगोली प्रतियोगिता की प्रभारी नवनीत पाण्डेय, उषा भास्कर, कविता वर्मा, लोकेश्वरी राठौर रहीं। कार्यक्रम में अरूणा दीक्षित, नीता श्रीवास्तव,चंदना गोस्वामी, अनु कश्यप, किरण सिंह, चंचल कुशवाहा सहित सदस्य मौजूद रहे।

विश्व डायबिटीज दिवस पर आयोजित एनसीडी कैंप में 37,783 लोगों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिले में विश्व डायबिटीज दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वस्थ्य जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विशेष एनसीडी कैंप का आयोजन किया गया। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक के मार्गदर्शन में जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर यह कैंप आयोजित किया गया। इसी कड़ी में कलेक्ट्रेट परिसर में कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें कलेक्ट्रेट कार्यालय 109 अधिकारी-कर्मचारियों का बीपी एवं शुगर की जांच की गई। जिसमें संभावित बीवी के 37 लोग, मधुमेह के संभावित 6 लोग तथा 69 लोग सामान्य पाये गय। जिले में आयोजित कैंपों में 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों का ब्लड प्रेशर (बीपी) और ब्लड शुगर की जांच की गई। इसके साथ ही अन्य विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारियों का भी स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इसके लिए जिले में कुल 160 टीमों का गठन किया गया था, जिन्होंने दूरस्थ क्षेत्रों से लेकर शहरी इलाकों तक व्यापक रूप से इस कैंप का संचालन किया। यह विशेष शिविर 20 नवंबर को आयोजित किया गया था, इस शिविर में जिले भर में 37,783 लोगों का ब्लड प्रेशर और शुगर का परीक्षण किया गया। इनमें से 3,178 लोगों में बीपी और 2,273 लोगों में शुगर की संभावित समस्या का पता लगाया गया। चिन्हित लोगों को समय पर उपचार प्रदान करने के उद्देश्य से यह पहल की गई थी।

इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, कर्मचारी और मितानिन बहनों का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने आयोजन को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। यह अभियान न केवल स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान में सहायक रहा बल्कि जिले में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

जाबो कार्यक्रम के तहत् नगरीय निकाय के लोगों को किया जा रहा जागरूक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। नगरीय निकाय एवं पंचायत आम चुनाव को स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराने के लिए जिले में कलेक्टर के निर्देशन में जाबो (जागव वोटर) कार्यक्रम अंतर्गत व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। प्रशासन की ओर से चुनाव के लिए गांव-गांव में मतदाता जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

इसी क्रम में जमीनी स्तर पर ग्रामीणों, आमनागरिकों, नवमतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक किया जा रहा है। नगरीय क्षेत्रों में अभियान चला कर लोगों को मतदान के लिए सब काम छोड़ मतदान करो की सीख दी जा रही है। इसी तारतम्य में कार्यालयीन कर्मचारी एवं सफाई कर्मचारियो के द्वारा रैली के माध्यम से मतदाताओं को निरंतर जागरूक करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इस दौरान कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मोबाइल की लत में 5वीं के छात्र ने लगाई फांसी

3 भाइयों के बीच फोन चलाने को लेकर हुआ विवाद,खेत गए थे माता-पिता

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में मोबाइल की लत में 5वी कक्षा के छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। दरअसल, तीन भाइयों के पास एक ही मोबाइल था। जिसे चलाने को लेकर उनके बीच विवाद हुआ। इससे गुस्साए 11 साल के नाबालिग ने अपनी जान दे दी। जिस समय यह घटना हुई, उस समय उसके माता-पिता काम करने खेत गए थे। मामला पचपेड़ी थाना क्षेत्र का है। दरअसल, ग्राम जोंधरा निवासी संतोष केंवट पेशे से किसान हैं। उनके तीन बेटे हैं। जिसमें 11 साल का कबीर केंवट सबसे छोटा बेटा था। वो कक्षा पांचवीं का छात्र था। चंद्रप्रकाश केंवट बड़ा और उसका एक मंझला भाई है।

स्कूल नहीं गया था छोटा बेटा कबीर: बुधवार की सुबह संतोष और उसकी पत्नी तीनों बच्चों को स्कूल जाने बोलकर काम करने खेत चले गए थे। माता-पिता के खेत जाने के बाद बड़ा बेटा चंद्र प्रकाश और उसका मंझला भाई स्कूल चले गए। वहीं, कबीर स्कूल नहीं गया और घर पर अकेला रुक गया।

कमरे में फंदे पर लटका मिला कबीर: जब दोपहर 1.30 बजे चंद्र प्रकाश स्कूल से लौटा, तो दरवाजा अंदर से बंद मिला। उसने दरवाजा खोलने के लिए आवाज दिया। लेकिन, अंदर से कोई आवाज नहीं आई। इस पर उसने खिड़की से झांककर देखा तो कबीर का शव फंदे पर लटक रहा था।

मोबाइल चलाने को लेकर हुआ था विवाद: छोटे भाई को फंदे पर लटकता देख वो घबरा गया। उसने तत्काल इस घटना की जानकारी अपने पड़ोसियों को दी। जिसके बाद संतोष और उसकी पत्नी को लोगों ने बताया। वो भी दौड़ते-भागते घर पहुंच गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस भी पहुंच गई। इस दौरान दरवाजा तोड़कर पुलिस कमरे में गई और शव को फंदे से नीचे उतारा। पूछताछ में पता चला कि, तीनों भाइयों के पास एक ही मोबाइल था। इसे चलाने को लेकर आए दिन झगड़ा होता था। घटना से पहले भी झगड़ा हुआ था। फिलहाल, पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच कर रही है।

बिरियानी के रायते में निकली जिंदा इल्लियां

अल-लजीज से जब्त किया गया सैंपल, होटल ने उल्टा बदनाम करने की कही बात

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। छत्तीसगढ़ के भिलाई में एक महिला ने दक्षिण गंगोत्री में स्थित अल-लजीज रेस्टोरेंट से जोमेटो के जरिए बिरियानी ऑर्डर किया था। महिला का आरोप है कि जब उसने बिरियानी और इसके साथ मिला रायता थाली में निकाला तो इसमें सफेद इल्लियां मौजूद थी।

महिला ने जब इसकी शिकायत रेस्टोरेंट से की तो मैनेजमेंट ने उल्टा संस्थान को बदनाम करने का आरोप लगा दिया। रेस्टोरेंट के इस व्यवहार और लापरवाही की शिकायत महिला ने इसके बाद फूड सेफ्टी डिपार्टमेंट में की। इसके बाद विभाग ने छापा मारा तो रेस्टोरेंट में वहां भारी गंदगी मिली। किचन में वेज और नॉन-वेज फूड साथ में रखे हुए थे। वहीं मैदे में कीड़े भी पड़े मिले।

दिल्ली विधानसभा चुनाव-आप की पहली लिस्ट जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी है। लिस्ट में 11 नाम हैं। इनमें से छह नेता ऐसे हैं, जो भाजपा या कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए हैं। ब्रह्म सिंह तंवर, बीबी त्यागी और अनिल झा ने हाल ही में भाजपा छोड़ी थी। वहीं जुबैर चौधरी, वीर सिंह धींगान और सुमेश शौकीन कांग्रेस से आप में आए हैं। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। इलेक्शन कमीशन मौजूदा सदन के पांच साल के कार्यकाल के खत्म होने की तारीख से पहले चुनाव की प्रक्रिया पूरी कराता है। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल किया था और 70 में से 62 सीटें जीती थीं। भारतीय जनता पार्टी सिर्फ 8 सीटें जीतने में सफल रही, जबकि कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला था। शराब नीति केस में श्वष्ठ ने केजरीवाल को 21 मार्च को अरेस्ट किया था। बाद में 26 जून को सीबीआई ने उन्हें जेल से हिरासत में लिया था। केजरीवाल ने करीब 156 दिन जेल में बिताए। फिलहाल जमानत पर बाहर हैं। उनके खिलाफ 2 जांच एजेंसी ने केस दर्ज किया है। केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने 13 सितंबर को सीबीआई केस में जमानत दी थी। वहीं, ईडी मामले में उन्हें सुप्रीम कोर्ट से 12 जुलाई को जमानत मिल गई थी।

दिल्ली में पॉल्यूशन- एक्यूआई 400 से गिरकर 379 हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में पॉल्यूशन की गंभीर स्थिति है। पांच दिन बाद गुरुवार को दिल्ली में एयर क्वालिटी इंडेक्स 400 के नीचे आया। यह 379 रिकॉर्ड किया गया। 300-500 के बीच एक्यूआई गंभीर स्थिति में माना जाता है। वहीं, दिल्ली पुलिस ने ई-कॉमर्स कंपनियों से कहा है कि राजधानी में ऑनलाइन पटाखे बेचना तुरंत बंद करें। दिल्ली पुलिस ने बुधवार (20 नवंबर) को ई-कॉमर्स कंपनियों को ई-मेल किया। दिल्ली पुलिस ने ये आदेश सुप्रीम कोर्ट के 11 नवंबर के ऑर्डर के चलते दिया। सुप्रीम कोर्ट ने एमसी मेहता बनाम भारत सरकार के मामले में निर्देश दिए थे कि पॉल्यूशन से निपटने के लिए पटाखों पर बैन लगाया जाए। राष्ट्रीय राजधानी में ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान-4 लागू है। 12वीं तक की सभी क्लासेस ऑनलाइन कर दी गई हैं। जीआरएपी-3 के तहत राज्य सरकारों को सार्वजनिक और नगर निगमों के कामकाजी समय में बदलाव करने कहा गया है। ताकि ट्रैफिक जाम कम हो और प्रदूषण घट सके। यह कदम हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए हो रहे प्रयासों का हिस्सा है।जीआरएपी-4 के तहत एक मास्क एडवाइजरी भी लागू की गई है, जिसमें लोगों से कहा गया है कि जब हवा की क्वालिटी बहुत खराब हो, तो वे बाहर निकलते वक्त मास्क पहनें। यह कदम उनकी सेहत की सुरक्षा के लिए भी मददगार होगा।12वीं तक की सभी क्लासेस ऑनलाइन, 50 प्रतिशत कर्मचारियों को वर्क फ्रॉम होम।

मुख्यमंत्री ने आपदामुक्त सिंहस्थ-2028 के प्रशिक्षण का शुभारंभ किया

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को उज्जैन में पुलिस लाइन सरोवर पर सिंहस्थ- 2028 को आपदामुक्त संपन्न कराने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 18 हजार पुलिस, एसडीआरएफ, होमगार्ड जवान एवं सिविल वॉलिंटियर्स को श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस दौरान डीप डाइवर्स, तैराकों, बोट हैंडलर्स के कार्यों का अवलोकन किया तथा ब्रीदिंग अप्रैटस, स्नेक कैचर एवं आपदा प्रबंधन के कार्य में आने वाले अन्य उपकरणों का निरीक्षण भी किया। उपकरणों की जानकारी डिविजनल कमांडेंट होमगार्ड श्री रोहतीश पाठक एवं जिला कमांडेंट होमगार्ड श्री संतोष कुमार जाट द्वारा दी गई। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल, प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, सांसद श्री अनिल फिरोजिया,विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, श्री सतीश मालवीय, श्री जितेंद्र सिंह पंड्या, महापौर श्री मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, जनप्रतिनिधि श्री संजय अग्रवाल, श्री रवि सोलंकी, संभागायुक्त श्री संजय गुप्ता, एडीजीपी श्री उमेश जोगा, कलेक्टर श्री नीरज कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा एवं अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

शराब नीति केस- दिल्ली हाईकोर्ट का ईडी को नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। शराब नीति केस में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर गुरुवार दिल्ली हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने ईडी को नोटिस जारी किया। इसमें जांच एजेंसी से उसका पक्ष रखने को कहा गया। केजरीवाल ने बुधवार (20 नवंबर) को याचिका लगाकर ट्रायल कोर्ट के फैसले पर स्टे लगाने की मांग की थी। हालांकि हाईकोर्ट ने अभी स्टे पर फैसला नहीं दिया है। केजरीवाल की दलील है कि निचली अदालत ने बिना किसी पूर्व मंजूरी के अपराध का संज्ञान लेने में गलती की है। ऐसे मामलों में सीआरपीसी की धारा 197 (1) के तहत राज्यपाल की पूर्व मंजूरी

लेना आवश्यक होता है, क्योंकि उस वक्त वह (केजरीवाल) सीएम पद पर थे। केजरीवाल फिलहाल जमानत पर बाहर हैं। उनके खिलाफ 2 जांच एजेंसी ने केस दर्ज किया है। केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने 13 सितंबर को सीबीआई केस में जमानत दी थी। वहीं, ईडी मामले में उन्हें सुप्रीम कोर्ट से 12 जुलाई को जमानत मिल गई थी। शराब नीति केस में ईडी ने उन्हें 21 मार्च को अरेस्ट किया था। बाद में 26 जून को सीबीआई ने उन्हें जेल से हिरासत में लिया था। शराब नीति केस- केजरीवाल 156 दिन जेल में बिता चुके केजरीवाल को ईडी ने 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। 10 दिन की पूछताछ के बाद 1 अप्रैल को तिहाड़ जेल भेजा गया। 10 मई को 21 दिन के लिए लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए रिहा किया गया। ये रिहाई 51 दिन जेल में रहने के बाद मिली थी। 2 जून को केजरीवाल ने तिहाड़ जेल में सरेंडर कर दिया।

सीबीएसई ने 10वीं-12वीं की डेटशीट जारी की

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने बुधवार देर रात 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा की तारीखों का ऐलान कर दिया। परीक्षाएं 15 फरवरी से होंगी। 10वीं की परीक्षा 18 मार्च तक और 12वीं की परीक्षा 4 अप्रैल तक चलेंगी। पहली बार परीक्षा से 86 दिन पहले डेटशीट जारी की गई है। इसकी वजह है कि इस बार स्कूलों ने समय से एलओसी यानी लिस्ट ऑफ कैंडिडेट्स भरा है। इस सेशन में 44 लाख स्टूडेंट्स परीक्षा देंगे। परीक्षा सुबह 10ः30 बजे शुरू होगी।10वीं का पहला एग्जाम अंग्रेजी का 10वीं क्लास के लिए पहला एग्जाम अंग्रेजी का होगा। साइंस का एग्जाम 20 फरवरी को होगा जिसमें सिर्फ एक दिन की छुट्टी दी गई है। वहीं सोशल साइंस का एग्जाम 25 परवरी को होगा। 10वीं के स्टूडेंट्स के लिए आखिरी एग्जाम 18 मार्च को कम्प्यूटर एप्लिकेशन्स, आईटी या एआई का होगा। 12वीं का पहला एग्जाम आंत्रप्रेन्योरशिप 12वीं क्लास के स्टूडेंट्स के लिए 15 फरवरी को आंत्रप्रेन्योरशिप का एग्जाम है। फिजिक्स का एग्जाम 21 फरवरी को होगा

राहुल बोले- पीएम मोदी अडाणी को बचा रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने गुरुवार को कहा अडाणी ग्रुप के खिलाफ अमेरिकी केस में नामित चारों राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं थी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और तमिलनाडु में उसकी सहयोगी पार्टी की सरकार थी। पार्टी प्रवक्ता संबित पात्रा ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री मोदी की छवि खराब कर रहे हैं। उन्होंने 2019 में राफेल मुद्दा उठाया था, लेकिन बाद में उन्हें सुप्रीम कोर्ट में माफी मांगनी पड़ी। दरअसल, गुरवार को ही राहुल गांधी ने अमेरिका में गौतम अडाणी पर लगे करप्शन के आरोपों पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। उन्होंने कहा था कि अडाणी जी 2 हजार करोड़ रुपए का स्कैम कर रहे हैं और बाहर घूम रहे हैं, क्योंकि पीएम

मोदी उन्हें प्रोटेक्ट कर रहे हैं। गौतम अडाणी ने अमेरिका में क्राइम किया है, लेकिन भारत में उन पर कुछ नहीं हो रहा है।

अडाणी की प्रोटेक्टर एसईबीआई की चेयरपर्सन माधबी बुच पर केस होना चाहिए। न्यूयॉर्क की फेडरल कोर्ट में हुई सुनवाई में गौतम अडाणी समेत 8 लोगों पर अरबों की धोखाधड़ी और रिश्वत के आरोप लगे हैं। यूनाइटेड स्टेट्स अटॉर्नी ऑफिस का कहना है कि अडाणी ने भारत में सोलर एनर्जी से जुड़ा कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए भारतीय अधिकारियों को 265 मिलियन डॉलर (करीब 2200 करोड़ रुपए) की रिश्वत दी या देने की योजना बना रहे हैं। आरोप है कि ओडिशा, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ और जम्मू-कश्मीर राज्य में बिजली कंपनियों के साथ कॉन्ट्रैक्ट करने के लिए सरकारी अधिकारियों को रिश्वत दी गई थी। अडाणी ने देश को हाईजैक किया¬ अडाणी का कुछ नहीं होता। प्रधानमंत्री कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि पीएम मोदी उनके दबाव में हैं। अगर मोदी ने ऐसा किया तो वे (मोदी) भी जाएंगे।

हरियाणा चुनाव ईवीएम हैकिंग मामला हाईकोर्ट पहुंचा

चंडीगढ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में ईवीएम हैक का मामला अब पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट पहुंच गया है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष उदयभान ने दावा किया है कि चुनाव में 14 विधानसभा सीटों पर धांधली की गई है, जिसके लिए पार्टी के पास पर्याप्त सबूत हैं। कांग्रेस ने जिन 14 सीटों पर ईवीएम हैकिंग का दावा किया है, उनमें 4 सीटें ऐसी हैं, जिन पर जीत-हार का अंतर 3000 से कम है। वहीं, एक विधानसभा सीट ऐसी भी है, जिस पर भाजपा उम्मीदवार ने महज 32 वोटों से जीत दर्ज की है। पहला आरोप¬ कांग्रेस अध्यक्ष उदयभान ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे ईवीएम हैक करके बदलने का8 अब बड़ा आरोप लगाया है।

सेंट्रल फोर्स की 8 और कंपनियां मणिपुर पहुंचीं

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में हिंसा बढ़ने के बीच केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की 8 और कंपनियां बुधवार को राजधानी इंफाल पहुंच गईं। एक दिन पहले ही सीएपीएफ की 11 कंपनियां मणिपुर पहुंची थीं। अधिकारियों के मुताबिक सीएपीएफ और बीएसएफ की चार-चार कंपनियों को राज्य के संवेदनशील और सीमांत इलाकों में तैनात किया जाएगा। सीएपीएफ की इन कंपनियों में से एक महिला बटालियन की है। केंद्र सरकार ने हाल ही में घोषणा की थी कि मणिपुर में सीएपीएफ की 50 नई कंपनियां तैनात की जाएंगी।

राज्य कांग्रेस की अपील- चिदंबरम पर कार्रवाई करें खड़गे

मणिपुर कांग्रेस ने बुधवार को पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से विवादास्पद पोस्ट करने वाले पी चिदंबरम के खिलाफ कार्रवाई करने की अपील की है। चिदंबरम ने क्षेत्रीय स्वायत्तता की वकालत की थी। खड़गे को लिखे लैटर में नेताओं ने कहा, पी चिदंबरम के पोस्ट की हम निंदा करते हैं।

पूर्णिया हवाईअड्डे को लेकर पप्पू यादव ने केंद्र और बिहार सरकार का जताया आभार

पटना (एजेंसी)। बिहार में पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव ने पूर्णिया हवाईअड्डे को लेकर केंद्र एवं बिहार सरकार का आभार जताया और कहा कि यह विकास की दिशा में एक बड़ा कदम है। पप्पू यादव ने आज प्रेस वार्ता के दौरान केक काटकर पूर्णिया हवाईअड्डे के जल्द शुरू होने का जश्न मनाया और कहा कि पूर्णिया की जनता के लिए यह बहुत बड़ी जीत है। वर्षों से लंबित पूर्णिया हवाईअड्डे का सपना अब साकार होता दिखाई दे रहा है। पूर्णिया हवाईअड्डे का मामला उन्होंने कई बार संसद में उठाया। वे इस विषय पर केंद्रीय मंत्रियों से भी बार-बार मिले। उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, केंद्रीय मंत्री और पूर्णिया की जनता को धन्यवाद देता हूं। इस उपलब्धि के लिए सभी का सहयोग जरूरी था। सांसद ने बताया कि उन्होंने केंद्रीय मंत्रियों के सामने यह मुद्दा रखा था कि पूर्णिया में भी दरभंगा की तरह एक आधुनिक हवाई अड्डा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पूर्णिया हवाई अड्डा न केवल सीमांचल क्षेत्र के विकास के लिए अहम है ।

मणिपुर के लोग 'अंशकालिक राज्यपाल, विफल मुयमंत्री, 'अति-विफल गृह मंत्री से बेहतर के हकदार : कांग्रेस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने मणिपुर की स्थिति को लेकर बृहस्पतिवार को कहा कि राज्य के लोग एक 'अंशकालिक राज्यपाल, विफल मुख्यमंत्री और 'अति-विफल गृह मंत्री% से बेहतर के हकदार हैं। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने मणिपुर में पूर्णकालिक राज्यपाल नहीं होने का उल्लेख किया। असम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य के पास फिलहाल मणिपुर के

राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार है। रमेश ने 'एक्स% पर पोस्ट किया, ''31 जुलाई, 2024 से मणिपुर में कोई पूर्णकालिक राज्यपाल नहीं है। जिन पर वर्तमान में जिम्मेदारी है, वह अपना अधिकांश समय असम में बिताते हैं। एक प्रतिष्ठित आदिवासी राजनीतिक नेता अनुसुइया उइके जी का कार्यकाल 18 महीने से भी कम कर दिया गया था। यहां तक कि वह इस बात से भी हैरान हैं कि बार-बार अनुरोध के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य का दौरा क्यों नहीं किया।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव- 65.11 प्रतिशत वोटिंग, पिछली बार से 4 प्रतिशत ज्यादा

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपी के मुजफ्फरनगर जिले की मीरापुर सीट पर वोटिंग के दौरान भीड़ ने पुलिस पर पथराव किया। बाद में इंस्पेक्टर राजीव शर्मा ने भीड़ को खदेड़ने के लिए वहां मौजूद महिलाओं पर रिवॉल्वर तान दी। महाराष्ट्र की सभी 288 और झारखंड की 38 विधानसभा सीटों समेत 4 राज्यों की 15 विधानसभा और नांदेड़ लोकसभा सीट पर उपचुनाव की बुधवार को वोटिंग हुई। महाराष्ट्र में 65.11 प्रतिशत वोटिंग हुई। यह पिछले विधानसभा चुनाव के मुकाबले करीब 4 प्रतिशत ज्यादा है। 2019 के चुनाव में यहां 61.4 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। झारखंड में दूसरे फेज में 68.45त्न वोट डाले गए। पहले फेज में यहां 66.65 प्रतिशत वोटिंग हुई। 2019 के चुनाव में झारखंड में 67.04 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। यूपी में उपचुनाव की वोटिंग के दौरान हिंसा हुई। मुजफ्फरनगर जिले की मीरापुर सीट पर उपचुनाव की वोटिंग के दौरान भीड़ ने पुलिस पर पथराव किया। पुलिस को जान बचाकर भागना पड़ा।

इसरो प्रमुख का दावा-अगर भारत रॉकेट सेंसर बना सकता है, तो वह कार सेंसर भी बना सकता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख एस. सोमनाथ ने बुधवार को बेंगलुरु टेक समिट 2023 के दौरान कार सेंसर के निर्माण के लिए भारत की क्षमता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अगर भारत रॉकेट सेंसर का उत्पादन कर सकता है, तो वह कार सेंसर बनाने में भी सक्षम है, बशर्ते घरेलू उत्पादन में लागत घटाने के उपाय किए जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत को आयात पर निर्भर रहने के बजाय, घरेलू स्तर पर सेंसर तकनीक के निर्माण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। सुमनथ ने बेंगलुरु टेक समिट के दौरान कहा कि भारत ने रॉकेट सेंसर के निर्माण में महत्वपूर्ण निवेश किया है, लेकिन कार सेंसर के निर्माण में उच्च लागत एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आई है। उनका मानना ??है कि कार सेंसर का उत्पादन केवल तब ही व्यवहार्य हो सकता है,

जब इसके उत्पादन स्तर को बढ़ाया जाए और लागत को नियंत्रित किया जाए। उन्होंने उद्योग से अधिक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि इस दिशा में शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत नीतिगत हस्तक्षेप से समाधान मिल सकता है। उन्होंने कहा, अगर हम रॉकेट सेंसर बना सकते हैं, तो हम कार सेंसर भी बना सकते हैं। यह जरूरी है कि हम घरेलू विनिर्माण पर अधिक ध्यान केंद्रित करें, ताकि आयात पर निर्भरता कम हो सके। सोमनाथ ने यह भी बताया कि कार सेंसर के उत्पादन में उच्च लागत के कारण, इसे घरेलू स्तर पर बनाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन यदि उत्पादन को बढ़ाया जाता है, तो लागत में भी कमी लाई जा सकती है और यह एक व्यवहार्य विकल्प बन सकता है।

इस अवसर पर सोमनाथ ने 2020 के अंतरिक्ष क्षेत्र सुधारों और 2023 की अंतरिक्ष नीति की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि इन सुधारों ने निजी क्षेत्र के विकास के लिए एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया है, जो भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख खिलाड़ी बना सकता है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में भारत में पांच कंपनियां उपग्रह बना रही हैं और कई अन्य कंपनियां रॉकेट और उपग्रहों के लिए उप प्रणालियां विकसित करने में अपने प्रयासों को तेज कर रही हैं। सोमनाथ ने कहा, भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र में बहुत रुचि है, और कई लोग चाहते हैं कि भारत में अगला स्पेसएक्स स्थापित हो। यह क्षेत्र निवेश के लिए बहुत उपयुक्त है और इसमें बड़ी संभावनाएं हैं।

योगी ने देखी 'द साबरमती रिपोर्ट', यूपी में टैक्स फ्री करने का किया ऐलान

उत्तरप्रदेश (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के फिनिक्स पलासियो मॉल में अपनी कैबिनेट के साथ फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' देखी। इस फिल्म को देखने के बाद उन्होंने एक बड़ा ऐलान किया और उत्तर प्रदेश में इस फिल्म को टैक्स फ्री कर दिया। फिल्म का निर्माण एकता कपूर ने किया है, और यह 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर आधारित है। फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' 15 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और रिलीज से पहले ही यह फिल्म सुर्खियों में आ चुकी थी। यह फिल्म गोधरा ट्रेन हादसा और उसके बाद के घटनाक्रम पर आधारित है, जिसने भारतीय इतिहास में गहरी छाप छोड़ी थी। फिल्म में समाज में हुए विवादों और राजनीतिक घटनाओं को दर्शाया गया है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने फिल्म देखने के बाद ऐलान किया कि 'द साबरमती

रिपोर्ट' को उत्तर प्रदेश में टैक्स फ्री कर दिया जाएगा। फिल्म में मुख्य भूमिका विक्रांत मैसी ने निभाई है, जिनसे सीएम योगी ने मुलाकात भी की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म को राज्य में टैक्स फ्री करने का फैसला लिया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने फिल्म देखने के बाद कहा, मैं फिल्म %द साबरमती रिपोर्ट की पूरी टीम को बधाई देता हूं, जिन्होंने इस सत्य को सामने लाने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाई और देशवासियों को वास्तविकता से अवगत कराया। उन्होंने यह भी कहा कि हर भारतवासी को यह फिल्म देखनी चाहिए। यह फिल्म उन लोगों को पहचानने में मदद करेगी, जो राजनीतिक स्वार्थ के लिए देश के खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हैं।

हमें इन चेहरों का पर्दाफाश करने की जरूरत है। सीएम योगी ने फिल्म को सभी नागरिकों को देखने की सलाह दी और इसे देखने से सत्य के नजदीक जाने की बात की। उनका मानना है कि इस तरह की फिल्मों के माध्यम से लोगों को सत्य और राजनीतिक स्वार्थ के बीच के फर्क को समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की ओर से यह फिल्म टैक्स फ्री करने का निर्णय इसलिए लिया गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे देख सकें और समाज में जागरूकता फैल सके।

केएल राहुल नहीं ऋषभ पंत पर 25 करोड़ खर्च करेगी आरसीबी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 24 और 25 नवंबर को होने वाले आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन की तैयारियां जोरों-शोरों से चल रही हैं. क्रिकेट के गलियारों में इसी की चर्चा है. इस बीच मिस्टर आईपीएल के नाम से पहचाने जाने वाले सुरेश रैना ने ऋषभ पंत को लेकर बड़ी भविष्यवाणी कर दी है. उन्होंने बताया कि पंत को 25 करोड़ रुपये मिल सकते हैं. इतना ही नहीं उन्होंने ये भी कहा है कि यदि रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु उन्हें खरीददती है, तो इसमें हैरानी नहीं होगी.

रैना ने कहा, ऋषभ पंत दिल्ली के कप्तान रहे हैं, तूफानी बल्लेबाज हैं और टॉप विकेटकीपर भी हैं. अगर आप उनकी ब्रांड वैल्यू पर नजर डालें तो स्पॉन्सरशिप के नजरिए से फायदेमंद रह सकते हैं. मुझे लगता है कि उन्हें 25-30 करोड़ रुपये मिलने चाहिए. मेरे लिए यह कोई चौंकाने वाली बात नहीं होगी अगर आरसीबी पंत को खरीद लेती है।

भारतीय टीम न्यूजीलैंड से घरेलू सीरीज में हार का कोई बोझ नहीं उठा रही है : बुमराह

पर्थ (एजेंसी)। कार्यवाहक कप्तान जसप्रीत बुमराह ने कहा है कि भारतीय टीम पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पूरे आत्मविश्वास के साथ उतरेगी और पिछले महीने न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में हार का कोई बोझ नहीं उठा रही है। भारत ऑस्ट्रेलिया का सामना करने की तैयारी कर रहा है, लेकिन न्यूजीलैंड सीरीज में हाल ही में मिली हार ने जटिलताएं बढ़ा दी हैं। टीम को कीवी टीम के हाथों 3-0 से क्लीन स्वीप का सामना करना पड़ा, जिसमें वानखेड़े स्टेडियम में 25 रन से हार भी शामिल है। यह 2000 के बाद से घरेलू टेस्ट सीरीज में भारत की पहली क्लीन स्वीप हार और तीन या उससे अधिक मैचों की सीरीज में उनकी पहली हार थी। भारत पांच मैचों की सीरीज में एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ उतरेगा: चार मैच जीतना और लगातार तीसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचना। बुमराह ने मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, जब आप जीतते हैं, तो आप शून्य से शुरुआत करते हैं, लेकिन जब आप हारते हैं, तो भी आप शून्य से शुरुआत करते हैं। हम भारत से कोई बोझ नहीं उठा रहे हैं। हां, हमने न्यूजीलैंड सीरीज से कुछ सीखा है, लेकिन वहां परिस्थितियां अलग थीं और यहां हमारे नतीजे अलग रहे हैं। नियमित कप्तान रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में टीम की अगुआई करने वाले बुमराह ने आगे कहा, हमने अपनी प्लेइंग इलेवन को अंतिम रूप दे दिया है और आपको कल सुबह मैच शुरू होने से पहले पता चल जाएगा।

भारतीय तेज गेंदबाज ने ऑस्ट्रेलिया में अपने ऐतिहासिक प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन की ओर इशारा करते हुए टीम की तैयारियों पर भी भरोसा जताया।

14 साल बाद भारत लौटेंगे, केरला के खेल मंत्री ने वर्ष 2025 में घोषणा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय फुटबॉल फैंस के लिए बेहद खुशखबरी है। दुनिया के दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी जल्द ही भारत लौटने की तैयारी में है। अर्जेंटीना के स्टार फुटबॉलर लियोनेल मेस्सी 14 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद भारतीय सरजमीं पर खेल का जादू बिखेरेंगे। इससे पहले अंतिम मैच लियोनेल मेस्सी ने वर्ष 2011 में कोलकाता में खेला था। ये मुकाबला साल्ट लेक में अर्जेंटीना और वेनेजुएला के बीच खेला गया था। वहीं अब फुटबॉल के जादूगर पूरे 14 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद फिर से भारत लौटेंगे। ये भारतीय खेल प्रेमियों के लिए बेहद खुशी का पल है। विश्व विजेता टीम अर्जेंटीना अगले साल भारत में अपना मैच खेलने वाली है। इसकी जानकारी केरल के खेल मंत्री अब्दुरहीमान ने दी है। उन्होंने तिरुवनंतपुरम में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि राज्य सरकार की पूरी निगरानी में ये मैच आयोजित होगा। उन्होंने कहा, इस हाई-प्रोफाइल फुटबॉल इवेंट के आयोजन के लिए राज्य के व्यापारियों द्वारा आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाएगी। उन्होंने इस ऐतिहासिक अवसर की मेजबानी करने की केरल की क्षमता पर विश्वास व्यक्त किया।

ब्रेंडन मैकुलम के वर्ल्ड रिकॉर्ड पर यशस्वी जायसवाल की नजरें

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुक्रवार यानी 22 नवंबर का दिन भारत और ऑस्ट्रेलिया के लिए बेहद अहम है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का आगाज इसी दिन से होगा जहां पर्थ में दोनों टीमों के बीच पहला टेस्ट खेला जाएगा। वहीं भारत के नियमित कप्तान रोहित शर्मा निजी कारणों की वजह से मौजूद नहीं होंगे, जबकि जसप्रीत बुमराह टीम की कमान संभालेंगे। इस दौरे पर सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल के प्रदर्शन पर भी सबकी नजरें रहेंगी, जोकि रोहित शर्मा के जोड़ीदार भी हैं।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में यशस्वी जायसवाल का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा था। उन्होंने अन्य बल्लेबाजों की तुलना में रन तो बनाए लेकिन उसे बड़े स्कोर में नहीं बदल सके। हालांकि, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में उनके पास एक बड़ी उपलब्धि हासिल करने का मौका होगा।

यशस्वी जायसवाल ने अपने टेस्ट करियर की शानदार शुरूआत की। उन्होंने 14 टेस्ट में 1407 रन बनाए। इस दौरान उन्होंने तीन शतक लगाए। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में 700 से ज्यादा रन बनाए। हालांकि, उसके बाद उनके बल्लेबाज से ज्यादा रन नहीं निकले हैं। ऑस्ट्रेलिया सीरीज उनके लिए काफी चुनौतीपूर्ण होने वाली है और उनके करियर को भी नई उड़ान दे सकता है। यशस्वी जायसवाल मैच के दौरान बड़े शॉट खेलने के लिए जाने जाते हैं और जब तक क्रीज पर रहते हैं छक्के और चौके लगाने से नहीं चूकते। उन्होंने इस साल 32 छक्के लगाए हैं। अगर वह पर्थ टेस्ट में दो और छक्के लगाते हैं तो वह ब्रेंडन मैकुलम के एक कैलेंडर ईयर में सर्वाधिक छक्के लगाने के रिकॉर्ड को तोड़ सकते हैं। मैकुलमन ने 2014 में 33 छक्के लगाए हैं। यशस्वी जायसवाल 2024 में जो रूट के बाद एक हजार टेस्ट रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज हैं। रूट ने 1338 रन बनाए हैं, जबकि जायसवाल के नाम 1119 रन है। अगर वह 219 रन और बना लेते हैं तो वह इस साल सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन जाएंगे।

यशस्वी जायसवाल ने अपने टेस्ट करियर की बेहतरीन शुरुआत की। उन्होंने 14 टेस्ट में 1407 रन बनाए। इस दौरान उन्होंने तीन शतक लगाए। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में 700 से ज्यादा रन बनाए। हालांकि, उसके बाद उनके बल्लेबाज से ज्यादा रन नहीं निकले हैं। ऑस्ट्रेलिया सीरीज उनके लिए काफी चुनौतीपूर्ण होने वाली है और उनके करियर को भी नई उड़ान दे सकता है।

पर्थ टेस्ट से पहले टीम इंडिया में बड़ा बदलाव, देवदत्त पडिक्कल को मिला मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया शुक्रवार यानी 22 नवंबर से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगी। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने के लिहाज से भी भारत के लिए ये टेस्ट सीरीज काफी अहम है। दोनों टीमों के बीच टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला 22 नवंबर से पर्थ के ऑप्टस स्टेडियम में खेला जाना है। वहीं इससे पहले भारतीय टीम में धुरंधर बल्लेबाज की एंट्री हुई है। इस मुकाबले में रोहित शर्मा भाग नहीं लेंगे। ऐसे में जसप्रीत बुमराह भारतीय टीम की कप्तानी करेंगे। इस मुकाबले से पहले भारतीय दल में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। बीसीसीआई ने बाएं हाथ के बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल को पहले टेस्ट के लिए मुख्य टीम में शामिल किया है। बीसीसीआई ने ट्वीट करके इस बात की जानकारी दी है। देवदत्त पडिक्कल हाल में भारत-ए की टीम का हिस्सा थे। जिसने ऑस्ट्रेलिया-ए के खिलाफ चार दिवसीय मुकाबले खेले थे। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ 36, 88, 26 और एक रन की पारी खेली थी। पडिक्कल ने इस साल इंग्लैंड के खिलाफ धर्मशाला में अपना टेस्ट डेब्यू किया था जिसमें उन्होंने बेहतरीन 65 रन बनाए थे।

वहीं शुबमन गिल के अंगूठे में फ्रैक्चर के कारण उनका पर्थ टेस्ट में खेलना सस्पेंस है। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि देवदत्त पडिक्कल पहले टेस्ट में तीसरे नंबर पर उतर सकते हैं।

फैंस के लिए खुशखबरी! पर्थ टेस्ट के दौरान टीम इंडिया से जुड़ेंगे रोहित शर्मा

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुक्रवार से भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत 5 टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। लेकिन उससे पहले टीम इंडिया के फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी आई है। दरअसल, टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा पर्थ टेस्ट के दौरान टीम इंडिया से जुड़ सकते हैं। जिसके बाद वो दूसरे टेस्ट में उपलब्ध रहेंगे।

बता दें कि, क्रिकबज की खबर के मुताबिक रोहित के 24 नवंबर को पर्थ में भारतीय टीम से जुड़ने की संभावना है। उस समय भारतीय टीम संभवतः तीसरे दिन के खेल में हिस्सा ले रही होगी। वहीं रिपोर्ट के अनुसार, रोहित ने बीसीसीआई को इस बारे में सूचित किया है।

रोहित शर्मा दूसरी बार पिता बने हैं, जिसके चलते वह अपने परिवार के साथ समय बिता रहे हैं। वहीं उनकी जगह जसप्रीत बुमराह टीम की कमान संभालेंगे। बुमराह ने सीरीज के शुरू होने से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी, जहां उन्होंने कहा था कि मैंने पहले रोहित से बात की थी। लेकिन यहां आने के बाद मुझे टीम की अगुवाई करने के बारे में थोड़ी स्पष्टता मिली।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में मोहम्मद शमी खेलेंगे या नहीं? जसप्रीत बुमराह ने दिया ये अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 की शुरुआत 22 नवंबर यानी शुक्रवार से होगी। पहला टेस्ट दोनों टीमों के बीच पर्थ में खेला जाएगा और इस मैच में भारतीय टीम की कप्तानी जसप्रीत बुमराह करेंगे क्योंकि पहले टेस्ट मैच के लिए रोहित शर्मा उपलब्ध नहीं होंगे। बुमराह पहली बार ऑस्ट्रेलिया धरती पर किसी टेस्ट मैच में टीम की कप्तानी करने जा रहे हैं और ये उनके लिए बतौर कप्तान खुद को साबित करने का बेहतरीन मौका भी होगा। पहले टेस्ट मैच में भारतीय टीम में रोहित शर्मा और शुभमन गिल जैसे दिग्गज खिलाड़ी नहीं होंगे ऐसे में बुमराह के लिए चुनौतियां और बढ़ जाती है। इस टेस्ट मैच से पहले बुमराह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अपनी कप्तानी, टीम की तैयारियों पर बात की साथ ही मोहम्मद शमी इस टेस्ट सीरीज में खेलेंगे या नहीं इसके बारे में भी बताया। शमी ने कुछ दिन पहले ही प्रोफेशनल क्रिकेट में इंजरी के बाद वापसी की है और रणजी में उन्होंने बंगाल का प्रतिनिधित्व करते हुए पहले मैच में 7 विकेट भी लिए और दूसरी पारी में मध्यप्रदेश के खिलाफ अच्छी बल्लेबाजी भी की। बुमराह ने शमी के बारे में बात करते हुए कहा कि शमी भाई ने क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया है। जाहिर है वह इस टीम का अहम हिस्सा हैं। मुझे यकीन है कि प्रबंधन भी उन पर कड़ी नजर रख रहा है। उम्मीद है कि चीजें सही होंगी और उन्हें यहां भी देख पाएंगे। बता दें कि, पहले माना जा रहा था कि शमी जल्द से जल्द ऑस्ट्रेलिया भेजा जा सकता है जब उन्होंने रणजी में अपनी फिटनेस साबित कर दी थी, लेकिन बाद में ये रिपोर्ट सामने आई की भारतीय सेलेक्टर्स शमी को लेकर किसी भी तरह की जल्दबाजी में नहीं हैं और वे चाहते हैं कि शमी घरेलू स्तर पर कुछ और मैच खेलें और पूरी तरह से लय में आएं।

विराट कोहली के पोस्ट ने मचाई हलचल, क्यों उड़ने लगी अनुष्का से तलाक की खबरें?

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के शुरू होने का क्रिकेट फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस दौरान भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। इसका पहला टेस्ट पर्थ में 22 नवंबर से खेला जाएगा। वहीं पर्थ टेस्ट से पहले टीम इंडिया के सलामी विराट कोहली ने अपनी एक्स और इंस्टाग्राम पोस्ट से फैंस के बीच चिंता बढ़ा दी है। इस पोस्ट से कोहली और अनुष्का के बीच कुछ भी ठीक नहीं चलने की अफवाहें उठने लगी हैं। बता दें कि, विराट कोहली ने एक्स और इंस्टाग्राम पर अपनी एक पोस्ट शेयर की है, जिसमें व्हाइट बैकग्राउंड टेम्पलेट पर ब्लैक टेक्स्ट था। विराट ने पोस्ट में लिखा कि, पीछे मुड़कर देखें तो हम हमेशा थोड़े अलग रहे हैं, हम कभी भी उन बॉक्स में फिट नहीं हुए, जिसमें लोगों ने हमें रखने की कोशिश की। दो लोग जो बस एक-

दूसरे से जुड़े हुए थे।

उन्होंने आगे लिखा कि, हमने इतने सालों में बहुत सारे बदलाव किए हैं, लेकिन हमेशा चीजों को अपने तरीके से किया है। कुछ लोग हमें पागल कहते थे, कुछ लोग बस समझ नहीं पाते थे। लेकिन सच कहूं तो हमें इन सबकी परवाह नहीं थी। हम बस खुद को समझने की कोशिश कर रहे थे। उतार-चढ़ाव और यहां तक कि महामारी भी हमें हिला नहीं सकी। इसके विपरीत, इसने हमें याद दिलाया कि अलग होना हमारी सबसे बड़ी ताकत है।वहीं कोहली के फैंस के बीच इस पोस्ट से हलचल मच गई है। कुछ फैंस को लगने लगा कि विराट कोहली अब रिटायरमेंट का ऐलान कर देंगे। तो कुछ कहने लगे है कि अब विराट और अनुष्का के बीच तलाक का वक्त आ गया है। हालांकि, ये पोस्ट ने तो विराट कोहली के रिटायरमेंट से जुड़ी थी और ना ही विराट-अनुष्का के अलग होने से। बल्कि ये पोस्ट एक प्रमोशनल पोस्ट ती, जिसे उन्होंने ब्रांड रॉन्ग को टैक करके शेयर किया था। लेकिन कोहली की इस पोस्ट ने सोशल मीडिया में भूचाल जरूर मचा दिया है।

ये दिग्गज होंगे इंडिया वर्सस ऑस्ट्रेलिया सीरीज में कमेंटेटर, हिन्दी पैनल में कई नाम कर सकते हैं आपको हैरान

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024 के लिए क्रिकेट जगत में रोमांच दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का आगाज शुक्रवार 22 नवंबर से हो रहा है। वहीं इस सीरीज पर पूनिया दुनिया की नजरें हैं, साथ ही कई फैंस को विराट कोहली से काफी उम्मीदे हैं। हालांकि, इससे पहले सीरीज में कमेंटेटर के नाम की लिस्ट सामने आ गई है।

वहीं पहला टेस्ट 22 नवंबर से पर्थ में खेला जाएगा, जिसके लिए अंग्रेजी कमेंट्री का भार मैथ्यू हेडन, रवि शास्त्री, सुनील गावस्कर, वसीम अकरम, मुरली विजय, रसेल ऑर्नोल्ड औऱ मार्क निकोलस को चुना गया है। वहीं हिन्दी कमेंट्री कि जिम्मेदारी रवि शास्त्री, वसीम अकरम, चेतेश्वर पुजारा, सुनील गावस्कर, संजय

मांजरेकर, जतिन सप्रू और दीप दास गुप्ता को सौंपी गई है।

अंग्रेजी कमेंटेटर- मैथ्यू हेडन, रवि शास्त्री, सुनील गावस्कर, वसीम अकरम, मुरली विजय, रसेल आर्नोल्ड और मार्क निकोलस।

हिन्दी कमेंटेटर- रवि शास्त्री, वसीम अकरम, चेतेश्वर पुजारा, सुनील गावस्कर, संजय मांजरेकर, जतिन सप्रू और दीप दास गुप्ता।

भारतीय टीम ने अब तक ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर कंगारू टीम के खिलाफ कुल 52 मैच खेले हैं, जिनमें से टीम इंडिया केवल 9 बार जीत दर्ज कर सकी है। वहीं ऑस्ट्रेलिया ने 30 मौकों पर बाजी मारी है और 13 मैच ड्रॉ रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया अपने घरेलू मैदानों पर खेले गए आखिरी 10 मैचों में भारत को सिर्फ 2 बार हरा पाया है। चार बार टीम इंडिया ने बाजी मारी है, वहीं चार मुकाबले ड्रॉ पर छूटे थे।

योजनाओं का लाभ हर पात्र हितग्राही तक पहुंचाना सुनिश्चित करें : प्रतिमा बागरी

रैगांव के जिला स्तरीय जन समस्या निवारण शिविर में शामिल हुई राज्यमंत्री

गोपाल बागरी को मौके पर पेंशन की स्वीकृति, 6 हितग्राहियों को मिले प्रधानमंत्री आवास

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना जिले में प्रत्येक विकासखण्ड की क्लस्टर पंचायतों में जिला स्तरीय जन समस्या निवारण शिविर लगाये जा रहे हैं। गुरूवार को सोहावल विकासखण्ड की 93 ग्राम पंचायतों के लिए क्लस्टर ग्राम पंचायत रैगांव में संपन्न जिला स्तरीय जन समस्या निवारण शिविर में नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी शामिल हुई। उन्होंने मौके पर शिविर में प्राप्त समस्याओं के आवेदनों के निराकरण की जानकारी ली। राज्यमंत्री ने शिविर में विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को स्वीकृत हित लाभ का वितरण भी किया। शिविर में कुल 101 आवेदन समस्याओं संबंधी प्राप्त हुए। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे, एसडीएम एलआर जांगडे, सीएमएचओ डॉ. एलके तिवारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास सौरभ सिंह, सीईओ प्रतिपाल बागरी, जनपद सदस्य शिवकुमार बुनकर सहित अनुभाग और विकासखण्ड स्तरीय विभागों के अधिकारी एवं पंचायत प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राज्यमंत्री बागरी ने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और जन समस्याओं के निराकरण के लिए संवेदनशील और कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि जिला स्तरीय शिविर में जिला स्तर के अधिकारी अपने समूचे अमले के साथ आपके द्वार उपस्थित हो रहे हैं। जागरूक होकर इन शिविरों का लाभ उठाये। राज्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि शासन की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र हितग्राही तक पहुंचाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि इन शिविरों का मैदानी स्तर पर व्यापक प्रचार भी करें तथा क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि और पंचायत प्रतिनिधियों का सहयोग लेकर शिविर के उद्देश्यों को भली-भांति सार्थक करें।

राज्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना गरीबों के आश्रय के साथ बहुत बडा सहारा भी है। वर्ष 2024 के आवास प्लस योजना का सर्वे हो रहा है। सर्वे के दौरान पात्र हितग्राहियों का ही चयन करें। हितग्राही स्वयं भी अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। बिजली और खाद की समस्याओं पर चर्चा करते हुए राज्यमंत्री ने कहा कि आवश्यकता का आंकलन करें और संसाधनों की पूर्ति के प्रयास करें। ग्रामीण क्षेत्र के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में चिकित्सक की उपलब्धता सुनिश्चित कराये। राज्यमंत्री ने कहा कि बिजली, पानी एवं अन्य मूलभूत सुविधायें सरकार उपलब्ध करा रही है। इन संसाधनों के संचालन, संधारण के लिए निर्धारित राशि का भुगतान अवश्य करें, ताकि सेवाएं सुचारू रूप से चलती रहे।

राज्यमंत्री ने कहा कि रैगांव के बस स्टैंड के पास और करैया नाथ में स्थापित 63 केवीए ट्रांसफार्मर की क्षमता वृद्धि कर इसे 100 केवीए किया जाएगा। पूरे क्षेत्र में ट्रांसफार्मर चिन्हित कर उनकी क्षमता बढ़ाई जाएगी। सीएमएचओ डॉ. एलके तिवारी ने बताया कि राज्य शासन ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रैगांव का उन्नयन सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के रूप में किया है। इसके भवन निर्माण के साथ ही यहां 6 चिकित्सक पोस्ट किए जाएंगे।

जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लोगों की समस्याओं का मौके पर निदान करने के उद्देश्य से जन समस्या शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मौके पर निराकृत नहीं हो सकने वाली समस्या में टाइम लिमिट देकर हफ्ते 15 दिन में निराकरण कर दिया जाना चाहिए। अध्यक्ष जिला पंचायत ने किसानों की आय बढ़ाने, पशुपालन को प्रोत्साहित करने की बात भी कही।

अमरपाटन में ऑटो ड्राइवर के साथ ठगी

पेट्रोल पंप में नौकरी दिलाने का झांसा देकर फाइनेंस करा लिया वाहन, थाने पहुंचा मामला

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर जिले के अमरपाटन में पेट्रोल पंप पर नौकरी लगवाने का झांसा देकर एक ऑटो ड्राइवर के नाम पर कार फाइनेंस करा लेने का मामला सामने आया है। पीड़ित युवक ने अमरपाटन थाना में लिखित शिकायत की है। हालांकि कार्रवाई के वह अभी थाना और एसपी ऑफिस के चक्कर काट रहा है।

जानकारी के मुताबिक जिले की अमरपाटन तहसील अंतर्गत धौरहरा गांव निवासी संजय साकेत किराए की ऑटो चलाता है। संजय ने अपने ही गांव की पूजा मिश्रा और उसके भाई विवेक तिवारी से कही नौकरी दिलाने की बात कही। कुछ दिन बाद दोनों भाई-बहन ने पेट्रोल पम्प में नौकरी दिलाने के नाम पर संजय से आधार कार्ड, पैन कार्ड और उसकी फोटो ले ली।

एक दिन फाइनेंस कंपनी के लोग संजय के घर पहुंचे और किश्त की रकम भरने को कहा। तब पता चला कि उसके नाम पर इंडसइंड बैंक से एक कार फाइनेंस हुई है। फाइनेंस की रकम 11 लाख 20 हजार है।

पूरा मामला जान संजय के होश उड़ गए। बैंक से जानकारी लेने के बाद संजय ने पूजा मिश्रा और उसके भाई से बात की तो दोनों एक सप्ताह में रकम चुका देने को राजी हो गए। लेकिन जब 10 दिन तक बैंक की रकम चुकता नहीं हुई तो संजय में 20 सितंबर 2024 को अमरपाटन थाना में दोनों भाई-बहन के विरुद्ध लिखित शिकायत की। इसके बाद भी कोई कार्रवाई न होने पर संजय मानसिक रूप से पीड़ित है। उसका कहना है कि फाइनेंस कंपनी के लोग आए दिन उसे व उसके परिवार को परेशान कर रहे है।

इस मामले में अमरपाटन टीआई केपी त्रिपाठी ने बताया की मामले की जांच की गई है। बैंक में फोटो सहित सारे दस्तावेज संजय साकेत के ही लगे है। गाड़ी की चाबी लेते हुए उसकी फोटो भी है। अन्य बिंदुओं की भी पड़ताल जारी है।

चाय की गुमटी में मिला युवक का शव

परिजनों ने हत्या की जताई आशंका, बोले- गांव का युवक उसे बाइक से ले गया था

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट में गुरुवार को 36 वर्षीय किशोरीलाल का शव संदिग्ध परिस्थितियों में चाय की गुमटी में मिला। मृतक के परिजनों ने इसे हत्या बताते हुए गांव के ही सर्वेश यादव को जिम्मेदार ठहराया है। घटना भरतकूप थाना क्षेत्र के कोलौंहा की है। परिजनों के अनुसार, बुधवार शाम करीब 4 बजे सर्वेश यादव किशोरीलाल को बाइक पर बैठाकर बघेलाबारी ले गया। शाम 6 बजे सर्वेश, किशोरीलाल को नशे की हालत में उनकी चाय की गुमटी पर छोड़कर चला गया। उस समय गुमटी पर किशोरीलाल की पत्नी मंजू थीं, जो रात 7 बजे घर चली गईं। गुरुवार सुबह करीब 6 बजे किशोरीलाल का भाई ओमप्रकाश दुकान पर पहुंचा तो उसने शव देखा। किशोरीलाल के मुंह से खून निकल रहा था, जीभ बाहर निकली हुई थी और शरीर पर चोट के निशान थे।

पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लिया: घटना की सूचना पर भरतकूप पुलिस मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी गई है। परिजनों की शिकायत पर सर्वेश यादव को हिरासत में ले लिया गया है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद स्थिति स्पष्ट होगी।

गांव में तनाव: घटना के बाद से गांव में तनाव और भय का माहौल है। परिजनों का आरोप है कि किशोरी लाल की हत्या की गई है। पुलिस हर पहलू से मामले की जांच कर रही है।

कार सवार युवकों पर हमला, पुराने विवाद को लेकर तीन बदमाशों ने की मारपीट, युवक का हाथ टूटा, कार भी क्षतिग्रस्त

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना के सिविल लाइन चौराहे पर तीन लोगों ने कार सवार एक युवक और उसके साथी पर हमला कर दिया। गुरुवार को दिन दहाड़े बीच सड़क हुई इस घटना में हमलावरों ने कार सवार के हाथ तोड़ दिए और गाड़ी को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। मामला रेलवे की ठेकेदारी से जुड़ा माना जा रहा है। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मौके पर पहुंच कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के मुताबिक सतना के सिविल लाइन चौराहे पर स्थित सुलभ कॉम्प्लेक्स के पास दोपहर लगभग साढ़े 3 बजे तीन लोगों ने थार सवार रामपुर बघेलान निवासी नीलाम्बर अवधिया उर्फ मोनू और उसके साथी नरेंद्र विश्वकर्मा पर हमला कर दिया। हमलावरों में संदीपन खैरा और उसके दो अन्य साथियों के नाम सामने आए हैं। नीलाम्बर अवधिया और संदीपन खैरा दोनों ही एनएबीएल लैब चलाते हैं और आपस मे व्यवसायिक प्रतिद्वंदी हैं। दोनों के ही यहां रेलवे सहित अन्य विभागों में ठेकेदारी करने वाले लोग अपने सैम्पल और क्यूब टेस्ट करवाते हैं।

तीन हमलावरों ने किया हमला: नीलाम्बर अवधिया गुरुवार को रामपुर स्थित अपने लैब से अपने साथी नरेंद्र को लेकर सतना में रेलवे के कार्यालय में किसी काम के सिलसिले में आए थे। यहां से लौट कर वो आबकारी विभाग में बतौर सब इंस्पेक्टर पदस्थ अपने चचेरे भाई राकेश अवधिया से मिलने सिविल लाइन स्थित आबकारी कंट्रोल रूम जा रहे थे। उन्होंने सुलभ काम्प्लेक्स के पास मोड़ पर गाड़ी रोक कर राकेश को फोन लगाया, तो राकेश ने अपने शहर से बाहर होने की जानकारी दी। नीलाम्बर कॉल डिस्कनेक्ट कर आगे बढ़ने ही वाले थे कि पीछे से संदीपन खैरा और उसके साथियों ने उनके ऊपर हमला कर दिया। हमले में नीलाम्बर के हाथ फ्रैक्चर हो गए हैं और शरीर के अन्य हिस्सों में भी चोटें आई हैं। हमलावरों ने गाड़ी में भी तोड़फोड़ की, जिसके कारण नीलाम्बर और नरेंद्र को कांच भी लगे हैं। उन्हें पहले जिला अस्पताल और फिर प्राथमिक इलाज के बाद बिरला अस्पताल ले जाया गया है।

जिला चिकित्सालय में रक्तदान शिविर आज

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। रीवा संभाग के 4 प्रमुख जिलों में रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में 22 नवम्बर को जिला चिकित्सालय सतना में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसी प्रकार रीवा जिले में 27 नवंबर तथा सिंगरौली जिले में 29 नवम्बर को जिला मुख्यालय में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

इस संबंध में कमिश्नर बीएस जामोद ने कहा है कि 15 से 50 वर्ष की आयु के सभी व्यक्ति प्रत्येक 3 माह में रक्तदान कर सकते हैं। आपके द्वारा दिया गया रक्त किसी व्यक्ति के प्राण बचाने के काम आयेगा। संभाग में नवम्बर माह में स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। हर व्यक्ति स्वयं रक्तदान करके शिविर को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें। साथ ही अन्य लोगों के लिये प्रेरित करें।

कमिश्नर ने कहा है कि रक्तदान करने से हमारे शरीर को कोई नुकसान नहीं होता है। रक्तदान शिविर के लिये सामाजिक संगठन तथा स्वयंसेवी संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भागीदारी निभायें। संभाग के सभी जिलों में नियमित अंतराल से रक्तदान शिविर आयोजित किये जा रहे हैं, जिससे ब्लड बैंक में पर्याप्त मात्रा में रक्त उपलब्ध रहे। कई बार समय पर रक्त प्राप्त न होने से गंभीर रोगियों के प्राण संकट में पड़ जाते हैं। शरीर से जितना रक्त बाहर निकलता है उसका निर्माण कुछ ही दिनों में पुनः हो जाता है। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति 90 दिनों के अंतराल से नियमित अंतराल कर सकता है। जब हम रक्तदान करते हैं तो हमारे शरीर में नए रक्त का निर्माण होता है। आपके द्वारा किये गये स्वैच्छिक रक्तदान का उपयोग गंभीर रोगियों के प्राण बचाने में किया जायेगा।

महिला एवं बाल विकास मंत्री भूरिया दो दिवसीय प्रवास पर रहेंगी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। म.प्र. शासन महिला एवं बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया 22 नवम्बर को प्रातः 6.40 बजे रेवांचल एक्सप्रेस से सतना आयेंगी। निर्धारित कार्यक्रमानुसार मंत्री निर्मला भूरिया प्रातः 8 बजे सतना से चित्रकूट के लिए प्रस्थान कर प्रातः 10.30 बजे चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित सतत विकास के लक्ष्य पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता करने के उपरांत रात्रि विश्राम चित्रकूट में करेंगी। इसी प्रकार मंत्री निर्मला भूरिया प्रवास के दूसरे दिन 23 अक्टूबर को प्रातः 7.30 बजे चित्रकूट से मैहर के लिए प्रस्थान कर प्रातः 10 बजे मैहर पहुंचेंगी।

मैहर पुलिस का प्राइवेट वाहन पलटा, हैंडपंप से टकराकर पलटी गाड़ी, रामनगर के आरक्षक की वर्दी-बैच, शराब की बोतलें और वसूली की लिस्ट भी मिली

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर-शहडोल जिले की सीमा में पुलिस का प्राइवेट बोलेरो वाहन हैंडपंप से टकराकर पलट गया। वाहन में मैहर जिले के रामनगर थाना में पदस्थ एक आरक्षक की वर्दी और बैच भी मिला है। इस घटना में एक बुजुर्ग गंभीर रूप से घायल हो गया है।

जानकारी के मुताबिक, यह दुर्घटना मैहर-शहडोल जिले के सीमावर्ती थाना देवलोंद के बुड़वा हायर सेकेंडरी स्कूल के पास बुधवार की रात बताई जा रही है। घटना में हैंड पंप में पानी भर रहे 62 वर्षीय बुजुर्ग ददन बैस बोलेरो की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। घायल बुजुर्ग को इलाज के लिए रीवा ले जाया गया है।

दुर्घटनाग्रस्त बोलेरो नंबर एमपी17 टीए 3258 मैहर जिले के रामनगर थाना में पदस्थ आरक्षक धर्मेंद्र पाठक का बताया जा रहा है। बोलेरो में पुलिस की वर्दी और आरक्षक क्रमांक 216 धर्मेंद्र पाठक का बैच भी मिला है। इस के अलावा पैसे वसूलने की लिस्ट शराब की शीशियां भी गाड़ी में पाई गई है। बताया जाता है कि दुर्घटना के वक्त बोलेरो में तीन लोग भी सवार थे जो पीछे का शीशा तोड़ कर निकले और भाग गए।

क्षेत्रीय लोगों की मानें तो यह पूरा मामला अवैध रेत खनन एवं परिवहन से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। क्षेत्र में पुलिस कर्मी प्राइवेट वाहनों से घूमते हैं और बालू का अवैध उत्खनन-परिवहन करने वालों से वसूली करते हैं। गाड़ी में पाई गई लिस्ट भी उसी वसूली प्रोग्राम से संबंधित बताई जाती है। सूचना मिलने पर देवलोंद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर तफ्तीश शुरू कर दी है।

सीमाई क्षेत्र में रात भर चलती है वसूली: जानकारों की माने तो मैहर जिले के रामनगर थाने की सीमा स्टेट हाईवे में शहडोल जिले के देवलोंद थाने के अंतर्गत भी लगी हुई है। लिहाजा रेत का अवैध परिवहन करने वाले वाहनों से रात भर वसूली होती है। इस काम मे प्राइवेट वाहन का इस्तेमाल किया जाता है।पुलिस कर्मी भी अक्सर सिविल यूनिफॉर्म में रहते हैं। उनके साथ उनके गुर्गे भी रहते हैं।

राज्यमंत्री ने सुनी आमजनों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने गुरूवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री बागरी द्वारा समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए। खाद की समस्याओं पर राज्यमंत्री ने कहा कि शनिवार को सतना जिले में उर्वरक रैक लगने वाला है।

एस.ई.सी.एल. के इंजीनियर संजय सिंह और असिस्टेंट वी. श्रीनिवास रिश्वत लेते गिरफ्तार

संजय कुमार

वी. श्रीनिवास

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी निप्र। प्रार्थी अंकित मिश्रा, निवासी- आमाखेरवा रोड, मनेन्द्रगढ़ द्वारा एन्टी करप्शन ब्यूरो, अंबिकापुर में शिकायत की गई थी कि वह एस.ई.सी.एल. में ठेकेदारी का कार्य करता है। उसे जी.एम. कार्यालय (एस.ई.सी.एल.) चिरमिरी, जिला एम.सी.बी. द्वारा जारी निर्माण कार्य का टेण्डर प्राप्त हुआ था। लगभग दो माह बीत जाने के बाद भी वर्कआर्डर जारी नहीं होने पर संजय कुमार सिंह, इंजीनियरिंग असिस्टेंट (ओवर-सीयर) जी.एम. कार्यालय (एस.ई.सी.एल.) चिरमिरी से मुलाकात करने पर उसके द्वारा 11,000 रूपये की रिश्वत की मांग की गई। प्रार्थी रिश्वत नहीं देना चाहता था बल्कि आरोपी को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़वाना चाहता था। शिकायत सत्यापन दौरान आरोपी संजय कुमार सिंह द्वारा 7,000 रूपये स्वयं को देने तथा 4,000 रूपये व्ही. श्रीनिवास, कार्यालय अधीक्षक को देने की बात कही गई। सत्यापन पश्चात् 21 नवंबर को ट्रेप आयोजित कर आरोपी संजय कुमार सिंह को प्रार्थी से 7,000 रूपये एवं उसके सहयोगी व्ही. श्रीनिवास को 4,000 रू0 रिश्वत लेते रंगे हाथों पकडा गया। आरोपियों को अभिरक्षा में लेकर उनके निवास स्थानों की तलाशी भी ली जा रही है। प्रकरण में आरोपियों के विरुद्ध धारा 7 एवं 12 पीसीएक्ट 1988 के प्रावधानों के तहत् अग्रिम कार्यवाही की जा रही है।

चित्रकूट गोलीकांड को लेकर पूर्व सांसद धरने पर बैठे

कहा-पुलिस का रवैया पीड़ित परिवार के प्रति असंवेदनशील

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट में 14 नवंबर को गढ़चपा गांव में हुए गोलीकांड के बाद राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। पीड़ित रामगोपाल द्विवेदी के परिवार द्वारा पिछले तीन दिनों से कलेक्ट्रेट परिषद पर धरना दिया जा रहा था। इस धरने में गुरुवार को भाजपा के पूर्व सांसद भैरव प्रसाद मिश्रा भी शामिल हो गए।

गढ़चपा गांव में 14 नवंबर को दबंग मिंटू सिंह ने रामगोपाल द्विवेदी पर गोली चला दी थी। रामगोपाल का परिवार आरोप लगा रहा है कि मिंटू सिंह, जो कि हिस्ट्रीशीटर है। सत्ता के संरक्षण में खुलेआम घूम रहा है। गोलीकांड के बाद परिवार अपनी जान बचाने के लिए कलेक्ट्रेट परिषद पर धरने पर बैठा है।

पूर्व सांसद भैरव प्रसाद मिश्रा के धरने में शामिल होने से राजनीति गर्म हो गई है। विपक्ष ने भाजपा सरकार पर तंज कसते हुए कहा, "जब अपनी ही सरकार में भाजपा के पूर्व सांसद धरने पर बैठे हैं, तो आम जनता का क्या होगा?"

भैरव प्रसाद मिश्रा ने पुलिस और प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा, "दबंग मिंटू सिंह को स्थानीय प्रशासन का संरक्षण प्राप्त है। पुलिस का रवैया पीड़ित परिवार के प्रति असंवेदनशील है। जिले में अपराध बढ़ रहे हैं और प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है।"

पीड़ित परिवार की मांग: पीड़ित परिवार ने प्रशासन पर कार्रवाई न करने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि जब तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं होती, वे धरना जारी रखेंगे। उन्होंने बताया कि अधिकारियों का कहना है कि कार्रवाई हो रही है, लेकिन हमें सुरक्षा नहीं मिल रही। हम डरे हुए हैं और इंसाफ चाहते हैं।

इस मामले ने न केवल प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि भाजपा सरकार की छवि पर भी असर डाला है। भैरव प्रसाद मिश्रा ने कहा कि अपनी ही सरकार में जनता और नेता दोनों न्याय के लिए भटक रहे हैं। पुलिस और प्रशासन को पीड़ित परिवार को तुरंत न्याय देना चाहिए।

पूर्व सांसद ने हाल ही में जिले में हुई डकैती का जिक्र करते हुए कहा कि जिले में अपराधियों का बोलबाला बढ़ गया है। पुलिस केवल कमजोर वर्ग पर कार्रवाई करती है, जबकि दबंग खुलेआम घूमते हैं। अब देखना यह होगा कि इस मामले में प्रशासन क्या कदम उठाता है। पीड़ित परिवार को न्याय मिल पाता है या नहीं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।